तृतीय अध्याय

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में पात्र तथा चरित्र-चित्रण

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में पात्र तथा चरित्र-चित्रण

3 1 ***पात्रः विभाजन, गुण और चित्रण-प्रणाली।***

3 1 1 पात्रों का विभाजन - प्रमुख, सहायक, गौण।

3 1 2 पात्रों की विशेषताएँ एवं गुण -
अनुकूलता, स्वाभाविकता, सप्राणता, सहृदयता, मौलिकता।

3 1 3 चरित्र चित्रण की प्रणालियाँ -
वर्णन प्रणाली, संवाद प्रणाली।

3 2 ***विवेच्य उपन्यासों के पात्रों का चरित्र-चित्रण।***

3 2 1 प्रमुख पात्र - प्रो शर्मा, माँ, जयशंकर।

3 2 2 सहायक पात्र - कुंती, राजदान, डिसूजा, चिन्हा(बहू)।

3 2 3 गौण पात्र - चंद्रभानसिंह, तोषी राजदान, ठक्कर की बीवी, विमल, विनय, रतन बरूआ, मि. गुप्ता, यादव, बंसल, सेनगुप्ता, मिसेस सब्बरवाल, कमलेश पांडे, रीना सूरी, निखिलादास, लाखनसाव, टाईप बाबू, ताऊ, त्रिलोकी ठाकुर, रामकिशोर, छोटको, बडको, सुपरवाइजर, सल्लो, बाबूजी आदि।

3 3 विवेच्य उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ - वर्णन, संवाद प्रणाली।

निष्कर्ष

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में पात्र तथा चरित्र-चित्रण

चरित्र-चित्रण उपन्यास का अनिवार्य तत्त्व ही नहीं, उसका प्रधान आकर्षण भी है। उपन्यास में पाठक चरित्र-चित्रण के सहारे ही पात्रों के साथ सायुज्य स्थापित कर आत्मविभोर हो जाता है। आधुनिक आलोचकों के मतानुसार किसी भी उपन्यासकार का महत्त्व और मूल्यांकन उनके पात्रों के चित्रणों द्वारा ही संभव होता है। मानव चरित्र न बिल्कुल श्याम होता है, न सफेद। उनमें दोनों का विचित्र मिश्रण होता है। जैसे-जैसे मानव का विकास होता गया वैसे-वैसे कथा-साहित्य में विविधता आती गई और चरित्र-चित्रण उपन्यास का प्रधान अग बन गया। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी ने उपन्यास में चरित्र-चित्रण का महत्त्व बताते हुए लिखा है, ''उपन्यास के चरित्रों का चित्रण जितना ही स्पष्ट, गहरा और विकासपूर्ण होगा, पाठकों पर उसका उतना हो गहरा असर पडेगा।''[1]

उपन्यास के चरित्रों पर उसकी घटनाओं का प्रभाव कई रूपों में पड़ता है। घटनाओं की प्रतिक्रिया अथवा क्रिया ही चरित्रों के उत्थान तथा पतन का कारण होती है और उनमें सहयोग देती है। इसी को चरित्रों का क्रम-विकास भी कहा जाता है। उपन्यासकार का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक होता है। वह अनेक प्रकार के पात्रों और घटनाओं का चित्रण करता है। मानव जीवन की व्याख्या करने के लिए उपन्यास में पात्रों की अवतारना होती है। पात्र मानव जीवन से ही संबंधित होते हैं। सामाजिक परिवेश से ही उपन्यासकार उपन्यास की सामग्री प्राप्त करता है।

''परिवेश ही व्यक्ति को बनाता भी है और बिगाडता भी तथा उसे ध्वंस की ओर ले जाता है। किसी पात्र के चरित्र का सही मूल्यांकन करना हो तो उसके परिवेश को जानना आवश्यक होता है। परिवेश से उसकी मानसिकता, उसके मन की कुंठाएँ, हीनता बोध अथवा सहजता का पता चलता है। जिस पर उपन्यास के कथानक का ढाँचा खडा रहता है।''[2]

जिस प्रकार समाज में कई वर्ग और उन वर्गो में कई प्रवृत्तियों के लोग होते हैं उसी प्रकार विविध उपन्यासों में कई वर्गो के तथा प्रवृत्तियों के पात्र उभारे जाते हैं।

"पात्र समाज के जिस वर्ग का भी प्रतिनिधित्व करते होंगे, पूरे उपन्यास में उन्हीं आदर्शों की रक्षा या विचारों का प्रचार करते दिखाई देंगे और यदि कहीं ऐसा अवसर आएगा कि उन्हें किसी प्रकार का सैद्धांतिक समझौता करने की आवश्यकता इस क्षेत्र में होगी, तो वे यथाशक्ति इससे बचेंगे और अपने चारित्रिक स्तर को बनाए रखने का प्रयत्न करेंगें।"[3]

3.1 पात्र: विभाजन, गुण और चित्रण प्रणाली -

3.1.1 पात्रों का विभाजन -

पात्रों के महत्त्व के आधार पर निम्नलिखित प्रकार हैं -

प्रमुख पात्र - पात्रों के साथ कथानक का मुख्य रूप से सीधा संबंध रहता है, जो कथानक को गति देते हैं, उससे विकास पाते हैं, उन्हें प्रधान या प्रमुख पात्र कहते हैं।

सहायक पात्र - उपन्यास में प्रमुख पात्रों के कार्यो में मदद करनेवाले पात्र को सहायक पात्र कहते हैं।

गौण पात्र - जिन पात्रों का कथानक से सीधा संबंध न होकर उपन्यास में जो प्रधान पात्रों के साधन बनकर आते हैं उन्हें गौण पात्र कहा जाता है।

3.1.2 पात्रों की विशेषताएँ और गुण -

अनुकूलता - यह चरित्र-चित्रण का आवश्यक गुण है। इसके अनुसार पात्र को कथानक के अनुकूल होना चाहिए। जिस उपन्यास का कथानक जिस प्रकार का हो, उसी प्रकार के पात्रों का प्रणयन भी उसमें होना चाहिए।

स्वाभाविकता - किसी भी कथा-कृति के पात्रों का यही गुण उसके पाठकों पर किसी प्रकार का प्रभाव डाल सकता है और उन्हें अपने विचार-प्रवाह के साथ बहा ले जा सकता है।

सप्राणता - सप्राणता का अभिप्राय यह है कि पात्रों का चरित्र जीते-जागते नर-नारियों की भाँति सर्जीव हो, किन्हीं आदर्शो के कारण वह निर्जीव न हो।

सहृदयता - उपन्यास में पात्रों को अधिक से अधिक मानवीय होना चाहिए। उन्हें एक दूसरे के सुख-दुख से प्रभावित होना चाहिए तथा अपने सुख-दुख में दूसरों की सहानुभूति और

संवेदना की अपेक्षा रखनी चाहिए।

मौलिकता - मौलिकता पात्रों का ऐसा गुण है कि जिसके अभाव में वे अनेक विशेषताओं से युक्त होते हुए भी प्रभावरहित हो सकते हैं। कम से कम प्रत्येक पात्र के व्यवहार, विचार और आदर्श में मौलिकता का होना अनिवार्य है।

3.1.3 चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ -

उपन्यासों में चरित्र-चित्रण के लिए प्रमुख दो ही प्रणालियाँ प्रयुक्त होती हैं। वर्गीकरण की दृष्टि से कुछ भेद हो सकते हैं। चरित्र-चित्रण की निम्नलिखित प्रणालियाँ हैं -

वर्णनात्मक प्रणाली -

उपन्यासकार अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वयं अपनी ओर से लिखता है, तो इसे चरित्र-चित्रण की वर्णनात्मक प्रणाली कहते हैं। लेखक पात्रों के चरित्र, आचार, व्यवहार आदि का स्वयं वर्णन करता है, जिसके कारण पाठक को उनके विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

संवादात्मक प्रणाली -

चरित्र-चित्रण की दूसरी प्रणाली संवादात्मक कहलाती है। इसमें उपन्यासकार स्वयं किसी पात्र के विषय में कुछ नहीं कहता, बल्कि पात्र स्वयं कथोपकथन का आश्रय लेते हैं। यह प्रणाली अधिक कलात्मक है।

उपर्युक्त दो प्रणालियों के अंतर्गत विवरणात्मक, संकेतात्मक, मनोवैज्ञानिक आदि प्रणालियों का समावेश होता है।

सूर्यबाला के 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में जिन पात्रों का चित्रण किया है, उन्हीं के माध्यम से वे अपने उद्देश्य तक पहुँचने में सफल हुई है। हर एक पात्र का निर्माण लेखिका ने किसी-न-किसी उद्देश्य से ही किया है। इन उपन्यासों के पात्रों के सही-सही चरित्रांकन के लिए हमें, उन सभी पात्रों को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित करना आवश्यक है।

प्रमुख पात्र - 'दीक्षांत' - नायक प्रो शर्मा।

'अग्निपंखी' - मॉ, जयशंकर आदि।

सहायक पात्र - 'दीक्षांत' - कुंती, डिसूजा, राजदान।

'अग्निपंखी' - जयशंकर की पत्नी।

गौण पात्र - 'दीक्षांत' - चंद्रभानसिंह, तोषी राजदान, ठक्कर की बीवी, विमल, विनय, रतन बरूआ, मि गुप्ता यादव, बंसल, सेनगुप्ता, मिसेस सब्बरवाल, कमलेश पांडे, रीना सूरी, निखिलादास, लखनसाव, टाईपबाबू आदि।

'अग्निपंखी'-ताऊ, त्रिलोकी ठाकुर, रामकिशोर, छोटको, बडको, सुपरवाइजर, सल्लो बाबूजी आदि।

उपर्युक्त प्रकारों के आधार पर अब हम एक-एक पात्र के चरित्र की विशेषताएँ देखेंगे -

प्रमुख पात्र -

'दीक्षांत' - प्रो. शर्मा -

प्रो. शर्मा 'दीक्षांत' उपन्यास का आदर्शवादी और प्रमुख पात्र है। इस उपन्यास में लेखिका ने शर्मा सर का परिचय फ्लैशबैक पद्धति से कराया है।

बचपन -

शर्मा सर को आज के छात्रों की उद्दंडता देखकर अपना बचपन याद आता है। उनके बचपन के व्यक्तित्त्व में निम्नलिखित विशेषताएँ देखी जा सकती हैं -

1. बचपन का आज्ञाकारी बालक -

प्रो शर्मा का बचपन का नाम विद्याभूषण था। बचपन में वे पिताजी की आज्ञा का यथोचित पालन करते थे। उनके पिताजी एक अध्यापक हैं। अत वे अपने बेटे को अच्छी-से-अच्छी शिक्षा और अच्छे संस्कार से भूषित करना चाहते हैं। शर्मा सर भी उनकी हर आज्ञा का पालन करते नजर आते हैं। बचपन में डिप्टी साहब से पॉच रूपए बक्षीस मिलने पर बालसुलभ वृत्ति के कारण आनंदित होना स्वाभाविक बात है। आनंदित

होकर वे हमेशा पाँच रूपये के नोट को देखा करते थे और पुलकित होते थे। उसकी इस अवस्था को पहचानकर पिता कहते, "ये छोटी-मोटी उपलब्धियाँ तो मनुष्य की परीक्षाएँ है, कसौटियाँ हैं कि देखे ये कितना खरा है और कभी-कभी उसे पथभ्रष्ट करने का नियति का षडयंत्र भी।"[4] पिता द्वारा इसतरह की शिक्षा देने के उपरांत तुरंत भूषण अपनी पढाई की ओर ध्यान आकर्षित करता था। इस बात से स्पष्ट है कि भूषण अपने पिता तथा अध्यापकों की आज्ञा का पालन करनेवाला आज्ञाकारी छात्र था।

2. मेधावी छात्र -

स्कूल जीवन में शर्मा सर एक मेधावी छात्र के रूप में पहचाने जाते थे। सभी छात्रों में अव्वल आते थे। अध्यापकों के द्वारा पुछे गए सवालों के जबाब बहुत ही सही तथा सलीखे से देते थे। स्कूल में लिखे सुभाषितों के अर्थ भी इस तरह बताते थे जैसे अध्यापक विवेचन दे रहे हो। उनकी लिखावट भी मोती की लडियों की तरह सुंदर थी। अपनी बुद्धिमत्ता से परीक्षण करने आए हुए डिप्टी साहब से पॉच रूपये का बक्षीस भी हासिल किया था। उनकी योग्यता तथा होशियारी के संदर्भ में लेखिका ने लिखा है, - "लेख लिखा तो अक्षर-अक्षर सुपाठ्य, मोती की लडियॉ पिरोयी हो ज्यों और सवाल हल किये तो भी ऐसे साफ-सलीके से कि शिक्षक कापी लौटाते हुए सारी क्लास को खोलकर दिखाते और गदगद होकर उनकी पीठ ठोंक देते।"[5] इतना ही नहीं तो इतिहास, भूगोल के उनके द्वारा बनाए गए मानचित्र डिप्टी साहब के मुआयने के समय पूरी पाठशाला की दीवारों पर लटकाये जाते थे। इसके साथ ही प्रादेशिक प्रतियोगिता में भी भेजे जाते थे। इस तरह पाठशाला में शर्मा सर एक मेधावी छात्र के रूप में जाने जाते थे।

3 प्रशंसा के पात्र -

अपनी बुद्धिमत्ता की कसौटी पर शर्मा सर बचपन में स्कूल के सभी अध्यापकों के प्रशंसा के पात्र बने हुए थे। स्कूल में कोई भी कार्यक्रम होता तो वे उसमें सहभागी होते और अपनी कुशलता से सभी अध्यापकों का दिल जीतते थे। उनके द्वारा प्रश्नों के उत्तर हल करने पर पाठशाला में हर अध्यापक अन्य छात्रों को उदाहरण के तौर पर उनकी कापियॉ दिखाते और उनकीं प्रशंसा करते थे। डिप्टी साहब भी उसकी प्रशंसा करते हुए उन्हें पॉच रूपये बक्षिस देते थे। शाबासी देकर उन्हें खूब पढने के लिए प्रेरित करते थे। अध्यापक उन्हें

अपनी पाठशाला की शान समझते थे, जैसे- ''भई विद्याभूषण ने तो इस विद्यालय का, हम शिक्षकों का नाम रोशन कर दिया। अब डिप्टी साहब भूलेंगे थोडे इस विद्यालय को। ऐसे विद्यार्थी ही विद्यालय की यश-कीर्ति के वाहक होते हैं।''[6] इस तरह पाठशाला में शर्मा सर अन्य अध्यापकों से प्रशंसा के पात्र बने हुए थे।

4. विनयशील तथा शिष्टाचारी व्यक्तित्व -

स्कूल में सबसे अव्वल तथा होशियार होने पर भी शर्मा सर के व्यक्तित्व मे एक और अच्छा गुण था कि वे अपने अध्यापकों से बात करते समय शिष्टता से पेश आते थे। कभी किसी के साथ बदतमीजी नहीं करते और न ही छात्रों के साथ झगडा या मारपीट करते थे। वे तो विनयी और शिष्ट स्वभाव के छात्र थे। कक्षा में अन्य छात्रों को जब अध्यापक किसी गलती पर डॉटते तो वे सिर झुकाकर खडे रहते और स्कूल छूटने के उपरांत उस बात को भूल जाते, ''लेकिन ऐसी किसी बात का अक्षांश ही कभी अगर विद्याभूषण के साथ घटित होता तो हफ्तों, पखवारों तक वह उस पछतावे और धिक्कार की गिरफ्त से बाहर न आ पाता। मुक्ति मिलती तो बस नए सिरे से प्रतिबद्ध हो जाने के बाद, अब गुरूजनों को फिर से ऐसा अवसर नहीं देना है। ऐसी चूक नहीं होनी है।''[7] इस बात से स्पष्ट होता है कि विद्याभूषण अपने अध्यापकों को कितना आदर देते थे। उनकी हर बात को मानते थे। उनके प्रति अपने मन में श्रद्धा का भाव रखते थे। वे जो भी बात कहे सिर झुकाकर सुनते और आगे वैसी गलती न हो इसलिए प्रतिज्ञा करते थे। इससे उनके व्यक्तित्व की विनयशीलता ही उजागर होती है।

5 घमंडीपन से परे -

विद्याभूषण अपने स्कूल में सबसे अव्वल, अध्यापकों की प्रशंसा का पात्र तथा शाबासी का पात्र था। फिर भी उसे इन सभी बातों का कभी घमंड नहीं होता। वह तो बहुत ही सीधे-साधे, प्रामाणिक तथा सादगीपसंद छात्र था। वास्तव में स्कूल में इतना मान सम्मान प्राप्त होने पर उसमें घमंडी वृत्ति का आना स्वाभाविक था, परंतु उसके व्यक्तित्व में ऐसी कोई भी बात नजर नहीं आती। इस संबंध में उसके अध्यापकों का मत है - ''अरे तो यह पंडीत जी का लडका है भी दूध का धुला। चेहरे पर चालाकी, काइयापन या शरारत का नामोनिशान नहीं और घमंड तो छू नहीं गया।''[8]

इस तरह शर्मा जी का बचपन बालसुलभ और प्रशंसा का था।

उच्च शिक्षा विभूषित युवक -

शिक्षा क्षेत्र में पीएच् डी जैसी श्रेष्ठ उपाधि प्राप्त करने के बाद भी शर्मा सर को सिनियर कॉलेज में अधिव्याख्याता का पद प्राप्त नहीं होता है। वे मजबूरन अपने परिवार को चलाने के लिए ज्युनियर कॉलेज में पार्ट टाईम नौकरी करने लगते हैं। और यह आशा रखे हुए हैं कि आज नहीं तो कल उन्हें सिनियर कॉलेज में अधिव्याख्याता का पद प्राप्त होगा। इसी आशा को लेकर वे अपनी नौकरी को अंजाम देने लगे हैं। एक अध्यापक के रूप में उनके व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं को उजागर किया जा सकता है -

1. पारिवारिक जीवन -

शर्मा सर गरीब है। अध्यापक की नौकरी भी टेंपररी है। घर में दो बच्चे और पत्नी है। सभी का खर्चा चलाने के लिए वे ठक्कर के बच्चों को पढाने का काम करते हैं। फिर भी शर्मा सर अर्थाभाव से पीडित हैं। इसी कारण उनके मन में परिवार को लेकर तरह-तरह के विचार आते हैं। वे घर पर कभी-कभी चाय नहीं पीते, उसके रूपए बचाकर पत्नी और बच्चों को कुछ चीजें खरीदना चाहते हैं। क्योंकि उनका बेटा अपने दोस्त माधव से परेड के लिए जूते मॉगकर लाता है। कभी-कभी उनके घर दाल, सब्जी भी नहीं होती। शर्मा सर पारिवारिक जीवन को सँभालने के लिए हर तरह का प्रयत्न करते है।

2. आदर्श अध्यापक -

शर्मा सर 'राधिका देवी बिसारिया कॉलेज' में आदर्श अध्यापक है। उन्होंने एम्. ए पीएच्. डी की है। छात्रों की गलतियॉ सुधारने का प्रयास करते हैं। जब छात्र उद्दंडता से पेश आते हैं तब वे उनकी शिकायत नहीं करते। अपना काम निष्ठा से पूरा करते हैं। बरूआ की उद्दंडता का जबाब देते समय शर्मा सर कहते हैं - "मेरे विषय में नंबर घटाने-बढाने या पास फेल करने का अधिकार सिर्फ मेरा है।"[9] प्रो शर्मा ईमानदारी से अपना कर्तव्य पूरा करते हैं। आदर्श उसूल से चलते हैं। वे शैक्षिक विषमताओं को हटाने के तीव्र लालसी हैं। विद्यालय का अनुशासन जो बिगड रहा है वह बदलने का प्रयत्न प्रिंसिपल द्वारा करना चाहते हैं। अध्यापकों की इज्जत, अस्मिता की रक्षा करना विद्यालय का पहला कर्तव्य मानते हैं। अपनों से बडों के प्रति आदर भावना

रखते हैं। मि. गुप्ता, प्रिंसिपल राजदान आदि के साथ आदर से बात करते हैं। इस तरह शर्मा आदर्श अध्यापक हैं।

3 विद्यार्थियों से परेशान प्रो. शर्मा -

कॉलेज में शिक्षा ग्रहण करने आनेवाले छात्रों में अमीर बाप के भी लडके हैं, जो शिक्षा लेने के उद्देश्य से नहीं अपितु अपना समय बिताने के उद्देश्य से कॉलेज में आया करते हैं। ऐसे छात्रों द्वारा अध्यापकों का जब चाहे मजाक उडाया जाता है। इससे शर्मा सर भी नहीं बचते। रतन बरूआ जैसे छात्रों के जरिए उनके ऊपर गाडी चलाते हुए किचड उछाला जाता है, तो कुछ उसी किस्म के लडकों द्वारा उनकी पोशाख पर फब्तियॉ कसी जाती हैं। ''पिछले हफ्ते जब उसे (नीली बुशर्ट) पहनकर गए थे तो एक बरामदे से दूसरे बरामदे तक पहुँचने के बीच ऊपरी मंजिल की रेलिंग से बेहद ऊल-जलूल किस्म की मिली-जुली फब्तियाँ कसती हुई कुछ उद्दंड आवाजें भी खिलखिलाकर छिप गई थी। उनमें 'रंगा-स्थार', 'ब्लू-जैकाल' और तरह-तरह के जानवरों की आवाजों की भौंडी नकले भी शामिल थी।''[10] कॉलेज में प्रवेश लेनेवाले छात्र अपनी मर्जी से क्लास में आते हैं और क्लास से बाहर जाते हैं। वे किसी नियम या अनुशासन को नहीं मानते हैं। अत. पढाने के उद्देश्य से शर्मा सर जब क्लास में जाते हैं तो उनके जाने के बाद छात्र बहुत देर से क्लास में आते हैं। जब देर से आने का कारण पूछा जाता है तो किसी और अध्यापक का नाम लेकर उनकी दुहाई देते हैं। क्लास में चुपचाप बैठना तो उनकी फितरत में ही नहीं। ''लडके आराम से मटरगस्ती करते, सीटियॉ मारते, हो-हल्ला करते घुसते हैं। आगे-पीछे धकापेल फिर सीटों का मनपसंद चुनाव।''[11] विद्यार्थियों के इस उद्दंडता के कारण शर्मा सर बहुत ही परेशान होते हैं।

4. कॉलेज के प्रिंसिपल तथा अन्य प्राध्यापकों से त्रस्त -

छात्रों की उद्दंडता से परेशान होकर शर्मा क्लास में तीन-चार मिनट लेट जाते हैं, तो तीन-चार दिनों के बाद चपरासी तुरंत नोटिस लेकर आता है, ''कुछ अध्यापक काफी देर से कक्षाओं मे जाते देखे गए हैं। जो विद्यालय के नियमों के अनुकूल नहीं है, भविष्य में सभी अध्यापक समय से ही कक्षाओं में पहुँचा करे।''[12]

गुप्ता शर्मा सर का सिनियर है और वही विभागाध्यक्ष भी हैं। परंतु शर्मा पीएच् डी. हुए हैं और गुप्ता सिर्फ एम्. ए , बी एड् हुए हैं। अपना ज्युनियर अपने से ज्यादा पढा-लिखा और क्वालिफाईड है, यह बात गुप्ता को पसंद नहीं। वे तरह-तरह से शर्मा को परेशान करते हैं। शर्मा सर को हर बार इस बात से अगाह किया जाता है कि शर्मा ज्युनियर क्लास में पढाने के लिए प्रशिक्षित नहीं हैं। जब दो अध्यापक एक ही किताब एक ही क्लास में पढाते हैं तो दोनों में यह तय होना जरूरी है कि कौन, कौन-सा पाठ पढाएगा। परंतु गुप्ता इस संदर्भ में कोई भी बात करने के पक्ष में नहीं है। उद्देश्य सिर्फ शर्मा को परेशान करना है और उन पर अपनी धौंक जमाने की कोशिश है। शर्मा सर की पीएच् डी से जलते हैं। इस संदर्भ में डिसूजा कहते हैं, "अब तक बेचारा थर्ड डिविजनर, सही-गलत, उल्टा-सीधा हाक ले जाया करता था, लेकिन अब एक बाकायदा पोजीशन होल्डर, एम्. ए पीएच् डी आ गया, सही का सही और गलत का गलत बताने अपने से ज्युनिअर का ज्यादा मेधावी और क्वालिफाइड होना वैसे भी आदमी पचा नहीं पाता फिर यह आदमी तो पूरा मक्कार है।"[13] गुप्ता कुटनीति का प्रयोग कर शर्मा सर को परेशान करता रहता है।

प्रिंसिपल राजदान कमिटी के हाथों की एक कठपुतली मात्र है। वे चाहकर भी अपने अधिकार का सही प्रयोग नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार कमिटी का अधिकार होता है उसी प्रकार उन्हें कार्य करना पडता है। शर्मा सर मिसेस गुलाटी के डिग्री कॉलेज के लेक्चर लेना चाहते हैं, परंतु उन्हें लेक्चर देने के बजाय उन्हें कॉलेज से निकालने की बात होती है। प्रिंसिपल अपने पद को बचाने के लिए शर्मा सर को बताते हैं कि उन्हें प्रशिक्षित न होने के कारण अगली टर्म से कॉलेज से निकाला जाता है। बल्कि वास्तविक वजह यह नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि "रूकी हुई ग्रांट की भगीरथ धारा फिर से विद्यालय को आप्लावित करेगी। शर्त सिर्फ बेहद छोटी-सी अभी-अभी एम् ए. करके आए उनके भांजे को फिलहाल कॉलेज में व्याख्याता का कार्यभार सौंप दिया जाए।"[14] तात्पर्य यह कि एम् एल ए के भॉजे को व्याख्याता की जगह खाली करने के लिए शर्मा को उनके पद से हटाया जाता है। जब प्रिंसिपल राजदान के द्वारा यह बात शर्मा को बताई जाती है कि तुम्हें व्याख्याता के पद से हटाया जाता है, तो शर्मा बहुत ही परेशान होते हैं। अपने परिवार के संदर्भ में सोचने लगते हैं कि अब वे उन्हें कैसे खिलाए-पिलाएँगे। सोचते-सोचते इतने परेशान होते हैं कि वे ऊँचाई से चलते समय अपना सतुलन खो बैठते हैं और नीचे पानी में गिर जाते हैं। इसी में आगे उनकी मृत्यु होती है।

A
13592

5. झूठी अफवाओं के घेरे में शर्मा सर -

शर्मा सर को बदनाम करने हेतु तथा उन्हें परेशान करने हेतु यह बात फैलाई जाती है कि उनके साथ किसी बदमाश ग्रुप ने मारपीट की है। शर्मा सर जब घर जाते हैं तो उनकी पत्नी बदहवास होकर तथा घबराकर उन्हें इस संदर्भ में पूछती है। तो उन्हें अचरज होता है। घर में तो वे पत्नी को जैसे-तैसे समझाते हैं। परतु कॉलेज तक यह बात फैल जाती है। सुबह शर्मा तय करते हैं कि सभी के साथ हँसते-खेलते दिन गुजारने हैं। परंतु कॉलेज में अध्यापक शंकित दृष्टि से उनकी तरफ देखते हैं। वे इन नजरों से परेशान होते हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं चलता कि क्यों स्टाफ के लोग इस तरह उन्हें देख रहे हैं। वे इसी उधेडबून में बैठे रहते हैं। तभी यादव द्वारा यह बात सुनते हैं कि उन्हें किन्हीं बदमाश लडकों ने पिटा है, तो वे और भी परेशान होते हैं। उनके चेहरे पर उत्तेजना, लाचारी, अविश्वास, क्रोध के मिल-जुले भाव स्पष्ट नजर आते हैं। वे बात को स्पष्ट करते हुए कहते हैं, "सरासर गलत .. यह सब सिर्फ मुझे बदनाम करने के लिए किया जा रहा है जहॉ तक मैं जानता हूँ मेरे साथ ऐसी कोई वारदात नहीं हुई ।"[15] बाद में इसी झूठी अफवाओं का सहारा लेकर उन्हें प्रिंसिपल राजदान भी परेशान करते हैं।

6 मानसिक अंतर द्वंद्व से पीडित -

जब मनुष्य के सामने दो विकल्प होते हैं, तब किस विकल्प का स्वीकार करें इस संदर्भ में विचार करते-करते मनुष्य मानसिक अंतर द्वंद्व में फँस जाता है। शर्मा सर इस तरह की अवस्था में से कई बार गुजरते हैं। जब क्लास लेने के लिए जाते हैं, लडके उन्हें परेशान करते हैं। क्लास में शोर मचाते हैं। तब उनके दिल में यह इच्छा जागृत होती है कि इन लडकों की शिकायत सुपरवाइजर और प्रिंसिपल से करनी चाहिए। परंतु अगले ही पल उनका विचार बदल जाता है। वे देखते हैं कि अन्य अध्यापकों को भी लडके उन्हीं की तरह परेशान करते हैं तो वे शिकायत करना नहीं चाहते। उल्टा लडकों की पैरवी करते हैं। तात्पर्य यह कि इच्छा होते हुए भी अन्य अध्यापकों की तरह शर्मा भी अपना मन मसोसकर शिकायत नहीं करते।

शर्मा सर ट्यूशन लेते हैं तब ठक्कर की बीवी के नए-नए कामों से उन्हें आत्मपीडा से गुजारना पडता है। वे सब कुछ सहन करते हुए अपना मन मसोसकर चुपचाप रहते हैं।

जब मिसेस गुलाटी अपने पति के साथ दो साल के लिए विदेश जानेवाली है। इस बात का पता चलने पर उसकी जगह डिग्री कॉलेज की जगह प्राप्त करने हेतु प्रिंसिपल को पूछने की नौबत आती है तब भी शर्मा सर अंतर द्वंद्व में फँस जाते हैं। बिना वजह सवालों के फेरे में फँस जाते हैं कि राजदान क्या कहेंगे ? मानेंगे या नहीं या इस संदर्भ में तुम्हें कैसे पता चला ? आदि।

7 आशावादी व्यक्तित्व -

प्रत्येक मनुष्य के अंदर किसी न किसी प्रकार की चाह तथा आशा होती है। शर्मा सर भी पीएच् डी होने के कारण आशा बनाए हुए है कि "शायद इस साल कोई चमत्कार हो ही जाए। प्रिंसिपल राजदान मॅनेजिंग कमिटी में उनके नाम की पैरवी कर ही दे। उसी तरह जिस तरह पिछले वर्ष अप्रैल में छटनी की नोटिस नहीं थमाई। दुनिया में असंभव तो कुछ भी नहीं और कुछ नहीं तो इसआधार पर तो परमनेंट होने का सपना देखा ही जा सकता है।"[16] शर्मा सर की प्रमोशन पाने की तथा परमनेंट होने की आशा तब और ही जोर पकडती है जब उन्हें डिसूजा द्वारा पता चलता है कि डिग्री कॉलेज की मिसेस गुलाटी अपने पति के साथ विदेश जानेवाली है और उसकी जगह खाली होनेवाली है। डिसूजा द्वारा यह बात मालूम होने पर शर्मा आशा और उत्साह से भर जाते हैं। वे इतने आनंदित होते हैं कि शाम को घर जाते समय बच्चों के लिए सोमोसे और बिस्कुट भी ले जाते हैं। उन्हें पूरा विश्वास था कि मिसेस गुलाटी की जगह उन्हें ही मिलेगी। ताकि वे पी एच् डी हैं और अन्य कोई पीएच् डी नहीं हुआ है। वे इस संदर्भ में सोचते हैं, "मैं सबसे जादा क्वालिफाईड हूँ, पीएच्. डी मुझे छोडकर किसी ने नहीं की है। मुझे छोडकर यह पद और किसी को देना सरासर अन्याय होगा यह मेरी ही नही, विद्यालय की प्रतिष्ठा का भी सवाल होगा कि संस्था में एक क्वालिफाइड व्यक्ति के रहते उसे उसके अधिकार से वंचित रखा जाय।"[17] इस तरह शर्मा सर को पूरा-पूरा यकिन था कि उन्हें परमनेंट किया जाएगा या मिसेज गुलाटी की जगह दिलाई जाएगी।

8. निराशायुक्त जीवन -

अनंत समस्याएँ, कठिनाइयॉ तथा परेशानियों से त्रस्त होने के कारण शर्मा सर का व्यक्तित्व उदासीन बना है। वे कभी भी किसी सहकर्मचारी के साथ दिल खोलकर बाते नहीं करते। अपने में ही खोए रहते

है। बचपन से ही उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता रही है कि वे किसी से बिना मतलब की बाते नहीं करते हैं। अध्ययन के अलावा उन्होंने अपने जीवन में किसी चीज को महत्त्व ही नहीं दिया है। इसी कारण बचपन में भी उनका जीवन एक प्रकार की नीरसता को लिए हुए है। उन्हें यह तक याद नहीं आता है कि वे बचपन से लेकर आजतक किसी बात पर दिल खोलकर हॅसे हुए हैं। जैसे, ''जहॉ तक उन्हें याद पडता है, जिंदगी में आजतक वे कभी ठहाका मारकर हँसे ही नहीं।''[18] पढाई को सब कुछ समझकर भविष्य की आशा को लेकर उन्होने पीएच्. डी किया है। परंतु उसके उपरांत भी उन्हें किसी भी महाविद्यालय में सिनियर अध्यापक की जगह नहीं मिलती। अपनी उपाधि भी उन्हें बेमतलब की प्रतीत होती है। वो अपनी स्थिति के संदर्भ में डिसूजा को बताते हुए कहते हैं, लेकिन उस पीएच् डी की औकात और बिसात तो सबको मालूम है, भइ। न ग्रेड, न ग्रेच्युटी एक अदना-सी टेंपररी सर्विस और हजार तरह की जबाब्देही, मेरी यह पीएच् डी मेरे लिए कितना बडा बोझ हो गई है, इतनी बडी लानत कि तुम सोच भी नहीं सकते।''[19] पीएच् डी के कारण तब उन्हें और भी निराश होना पडता है।

जब शर्मा सर किसी जगह साक्षात्कार के लिए जाते हैं तब उन्हें ओवर क्वालिफाईड के नाम पर नहीं लिया जाता। शर्मा सर स्थाई नौकरी का प्रयास करते-करते हताश हो जाते हैं और इस संदर्भ में आगे प्रय्त्न करना छोड देते हैं। डिसूजा मिसेस गुलाटी की डिग्री कॉलेज की जगह खाली होनेवाली है यह बताता है तब वे कहते हैं, ''तुम क्या समझते हो, मैनेजमेंट या प्रिंसिपल राजदान को जो भी डिसीजन लेना होगा या मिसेज गुलाटी का लेक्चर जिसे भी देना होगा, उसके बीच में अटकी मेरी फरियाद की भी कोई गिनती होगी।''[20] जब उन्हें प्रिसिपल राजदान द्वारा बताया जाता है कि उन्हें अगली टर्म से नौकरी से निकाला जाता है तो वे पूरी तरह निराशा हो जाते हैं। यह निराशा इतनी तीव्रता से उन्हें घेर लेती है कि उनके मन में आत्महत्या का विचार आता है।

9. टूटे विश्वास का द्योतक शर्मा सर -

परिस्थितियों के कठिन फेरों में आकर मनुष्य अपना आत्मविश्वास खोता चला जाता है। अपने आप पर भी उसका विश्वास नहीं रहता। शर्मा सर के बचपन का विचार किया जाए तो बचपन में उन्हें दुर्दम्य आत्मविश्वास था। परंतु आगे पढ़ाई करने के उपरांत वे अनत समस्याओं में घिर जाने की वजह से त्रस्त हो जाते हैं और इस स्थिति के कारण वे अपना आत्मविश्वास ही खो बैठते हैं। वास्तव में उनके जैसा क्वालिफाईड

व्यक्ति पूरे स्टाफ में नहीं। मिसेज गुलाटी दो साल विदेश जाने के कारण शर्मा सर को उनके लेक्चर मिलने चाहिए। परंतु अपने-आप में परेशान होने के कारण आत्मविश्वास पूरी तरह से खोए शर्मा सर यह मानने को तैयार ही नहीं कि प्रिंसिपल तथा मॅनेजमेंट उन्हें उनका यह अधिकार दे देंगे। डिसूजा उन्हें अपने अधिकार के प्रति सजग रहने और अपना अधिकार मॉगने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके अंदर का आत्मविश्वास जागृत करने की कोशिश करते हैं। डिसूजा के कहने पर कि अपने आप में आत्मविश्वास होना आवश्यक है तो शर्मा सर उसे कहते हैं, ''अगर मैं तुमसे कहूँ कि कभी मुझमें यह चीज भरपूर थी तो क्या विश्वास करोगे।''[21]

तात्पर्य यह है कि शर्मा के ऊपरी व्यक्तित्व को देखकर देखनेवाले यही समझते हैं कि इस आदमी में आत्मविश्वास नाम की कोई चीज है ही नहीं। परंतु शर्मा सर में आत्मविश्वास की कमी नही थी। सिर्फ परिस्थितियों के फेरे में आने के कारण वे आत्मविश्वास खोए हुए हैं। डिसूजा का मानना तो है कि उनमें आज भी आत्मविश्वास की कमी नहीं है। आवश्यकता सिर्फ उसे उजागर करने की, प्रकट करने की है। वे कहते हैं, ''अगर मैं कहूँ कि वह अभी तुम्हारे में भरपूर है सिर्फ परिस्थितियों की विडंबना ने तुम्हें अस्थिर कर दिया है उसे वापस मुठ्ठियों में खींचकर देखो, समेटो।''[22] अत· स्पष्ट है कि परिस्थितियों की विडंबना के कारण शर्मा सर का आत्मविश्वास पूरी तरह से खो गया है।

10. मायूस शर्मा सर -

शर्मा सर स्टाफ के लोगों के साथ ज्यादा बातचीत नहीं करते। अपनी परेशानियों से त्रस्त होकर अपने-आप में ही खोए-खोए रहते हैं। उस पर भी अगर कोई उनसे बात करना चाहता है या बात करता है तो उसकी बातों का मायूसी से जबाब देते हैं। एक दिन स्टाफ का आदमी गायतोंडे उन्हें रिसेप्शन समाप्त होते समय डिब्बा लेते हुए देखता है और पूछता है कि अबतक तो रिसेप्शन का समय खत्म होने जा रहा है आप अभी तक पढाने में ही अपना समय बिता रहे थे क्या ? उनकी इस बात का पूरी मायूसी के साथ शर्मा सर जबाब देते हैं - ''पढाने के अलावा अपना एक और भी तो काम है गायतोंड, दर-दर की ठोकरे और खिड़की खाना।''[23] इस बात से शर्मा सर के व्यक्तित्व का एक और पहलू हमारे सामने आता है और वह है मायूसी।

11. ईर्षालू वृत्ति -

अपनी अस्थाई नौकरी से परेशान, अनंत समस्याओं से घिरे और कठिनाइयों के साथ जूझते-जूझते शर्मा सर अपने आपको दुनियाँ का सबसे बदनसीब आदमी समझते हैं। अत. उनके व्यक्तित्व में और एक विशेषता शामिल है, वह यह कि वे दूसरे की पोजिशन को लेकर ईर्षा करते हैं। कॉलेज में राजनीति पढानेवाले चंद्रभान सिंह की पोजिशन को लेकर शर्मा सर उनसे ईर्षा करते हैं।

12. खीझ और क्रोधभरा स्वभाव -

अक्सर नौकरी करनेवाले आदमी दिनभर नौकरी में आनेवाली परेशानियों के कारण खीझ उठते हैं। शर्मा सर भी इस बात से अलग नहीं है। अपनी अस्थाई नौकरी, छात्र, विभागाध्यक्ष, प्रिंसिपल तथा मॅनेजमेंट के कारण परेशान होते हैं तो घर आकर अपना क्रोध बच्चों पर उतार देते हैं। पत्नी द्वारा बताया जाता है कि विनय को गणित में अच्छे अंक प्राप्त नहीं हो सके तो पूछताछ करने की आपेक्षा उस पर क्रोधित होते हैं, जैसे- ''वही तो उनका अवचेतन पहला मौका पाते ही झल्ला पड़ा, 'अब मैं दिन भर कॉलेज-ट्यूशन की दौड-भाग में परेशान रहता हूँ, तुमसे बच्चे की पढ़ाई पर भी नजर नहीं रखी जाती .।''[24] इस तरह वे पत्नी पर अपना क्रोध उतारने की कोशिश करते हैं। वे विनय पर भी क्रोधित होते या उसे भला-बुरा भी कहते परंतु विनय घर में नहीं होता है। वह परेड के लिए काले जूते मॉगने के लिए बाहर गया है। यह बात मालूम होने पर शर्मा सर सोचते हैं - ''ओह। विनय बिना बात बौखलाहट का शिकार बनने से बच गया.. .।''[25] ज्यादातर उस बच्चे पर ठक्कर, कॉलेज या महीने का बजट न पैठ पान की खीझ उतारी जाते हैं। इस बात से स्पष्ट है कि अपनी खीझ मिटाने के लिए बिना मतलब शर्मा सर परिवार के किसी-न-किसी व्यक्ति पर क्रोधित होते हैं।

इस प्रकार सूर्यबाला ने प्रो शर्मा का एक आदर्श अध्यापक के रूप में चित्रण किया है। शर्मा सर विनयशील, शिष्टाचारी, उच्च शिक्षा विभूषित युवक है। अनंत परेशानियों से त्रस्त होने के बावजूद भी ईमानदारी से अपना कर्तव्य पूरा करते हैं। मानसिक अंतर द्वंद्व से पीडित है। फिर भी वे आशावादी हैं। आदर्श उसूल से चलते हैं। इस तरह शर्मा सर आदर्श अध्यापक के रूप में चित्रित किए हैं।

'अग्निपंखी' - प्रमुख पात्र -

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की सजग कथाकार सूर्यबाला का 'अग्निपंखी' उपन्यास विधवा नारी के अभिशप्त जीवन का सजीव दस्तावेज है। 'अग्निपंखी' उपन्यास में दो प्रमुख पात्र हैं। इसमें एक पात्र है मॉ और दूसरा है जयशंकर। इसमें लेखिका ने परंपराप्रिय, सहनशील और परिवार के प्रति समर्पित एक भारतीय ग्रामीण नारी के जीवन को चित्रित किया है।

लेखिका ने जयशंकर के माध्यम से वर्तमान पीढी के युवकों का चित्रण किया है जो शिक्षित हैं, लेकिन सुसंस्कृत नहीं हैं।

माँ : विधवा नारी का प्रतीक -

'अग्निपंखी' नायिका प्रधान उपन्यास है। इसका प्रधान पात्र 'माँ' है। गॉव और शहर दोनों स्थानों पर वह उपन्यास के केंद्र में है। उसी के इर्द-गिर्द कथा घूमती है। मॉ भारतीय ग्रामीण नारी का प्रतीक है। भारतीय समाज में नारी अभिशप्त जीवन के लिए विवश है। नगर में नारी ने विविध क्षेत्रों में आशातित प्रगति की है। गॉव की नारी की स्थिति आज भी दयनीय ही है। उस पर यदि वह विधवा हो तो उसका जीवन नरकमय ही बन जाता है। मॉ विधवा है और संयुक्त परिवार में जीवन जीती है। सूर्यबाला ने मॉ के माध्यम से ग्रामीण विधवा नारी के विविध अंगों को प्रस्तुत किया है।

1. स्नेहसंवलित माँ -

जयशंकर मॉ का इकलौता बेटा है। अपने पति की मृत्यु के पश्चात् वह जयशंकर को ही अपना सबकुछ मानकर चलती है। जयशंकर के पिता की जयशंकर को पढाकर बडा अफसर बनाने की इच्छा थी। उनकी इस साध और अपनी स्वयं की इच्छा के कारण मॉ जयशंकर को पढाना चाहती है। वह जयशंकर की तरफ देखकर उसे अपने जीवन का आधार मानकर अपनी पहाड जैसी जिंदगी काटने का संकल्प करती है। वह अपने बच्चे से अगाध प्यार करती है। वह हमेशा उसे 'जयशंकर लाल', 'बचवा' या 'भैया' नामों से पुकारती है। देवर या जेठानी जयशंकर को कुछ कहते तो भी वह सहन नहीं कर पाती थी। एक दिन गुस्से में बड़े भाई ने जयशंकर को 'संकरवा' कहा। यह सुनकर मॉ का भावुक मन घायल हो जाता है। वह अपनी जेठानी से कहती है, "जीजी,

भाईजी से कह दो, डांट-मार चाहे जितना ले, पर 'संकरवा' कहकर 'रेरी' मार के न बुलाया करे।''[26] इससे उसका अपने बच्चे के प्रति प्रेम अभिव्यक्त होता है।

जयशंकर की पिता की मृत्यु के पश्चात् माँ सजना-सँवरना छोड देती है। इस क्षति को वह जयशंकर को सजाकर पूरा करना चाहती है। ''जब उसका अपना सजने-सँवारने का मन होता तो वह जयशंकर को सजाती-सँवारती। कभी-कभी मन में आता तो उसे फ्राक पहनाती, दो चोटी गूंथ देती।''[27] मॉ जयशंकर को खेती का काम करने के लिए नहीं कहती। जब परिवार के अन्य सदस्य जयशंकर को कुछ काम करने को कहते तो मॉ स्वयं वह काम करती है। वह हर समय उसकी पढाई की चिंता करती है। पढाई से उसे थकान महसूस हुई होगी यह सोचकर उसके सिर में ठंडा तेल लगाकर मलती है। मास्टरजी से हाथ जोडकर वह कहती है, ''लडका राह-कुराह न पढे। पढाई में कोताही हों, तो कान उमेठना। ढील मत छोडना। अब आपके आसरे कर दिया है। जिदगी भर मैं रांड-बेवा आपके गुन गाऊंगी।''[28] वह स्वयं अनपढ होकर भी अपने बच्चे को पढाना चाहती है। इससे शिक्षा के प्रति होनेवाली उसकी रूझान स्पष्ट होती है।

जयशंकर को 12-14 वीं कक्षा तक वह पढाती है। जयशंकर बड़ा होकर नौकरी की खोज में शहर जाकर बसता है। तब वह मॉ की कोई सहायता नहीं करता। वह उसे अनपढ, गँवार आदि समझता है, लेकिन इसके पश्चात् भी उसके पुत्र-प्रेम में कमी नहीं आती है। माँ कहती है, ''पागल है। हठी जयशंकर। भला मॉ कभी बेटे को किसी के सामने निहत्ता करेगी ?. न रे . . कभी नहीं .।''[29] इससे उसका अपने पुत्र के प्रति प्रेम, उसके अभावमय जीवन को देखकर मन की कसक ही व्यक्त होती है।

मॉ गॉव आकर घरवालों का अपने-पराए का व्यवहार देखकर आहत होकर कहती है, ''मैने तो आज तक कभी दो ऑखे नहीं की है। न कभी जयशंकर और श्यामकिशोर में फरक ही किया। लेकिन यहाँ आके जरूर अपने-पराये का व्योहार देख रही हूँ। वरना एक चूल्हे के रहते सब अपनी-अपनी कोठरियॉ कैसे चुनवा लेते ? अपनी-अपनी रंगाई-पुताई तक हो गयी। यही जयशंकर आएगा तो क्या भुसौले में सोएगा ? उसका भी तो घर है।''[30] इससे मॉ का जयशंकर के प्रति प्रेम, अधिकार, भावना और उत्तरदायित्व का बोध व्यक्त होता है। मॉ का जिस प्रकार से प्रेम है। उसी प्रकार अपने परिवार के प्रति भी प्रेम है। बडे भाई की पहली पत्नी की मृत्यु

होने पर वह श्यामकिशोर और सल्लो को अपने सगे बेटों की तरह पालती है। जब सल्लो महामारी में गुजर जाती है तो वह बन की कोयल की तरह महीनों कुहकती, रोती है।

2. गॉव-जीवन के प्रति आत्मीयता -

जयशंकर नौकरी हेतु गॉव छोडकर शहर बस जाता है। मॉ के मन में यह चाह है कि वह अपना जीवन अपने बेटे और बहू के साथ बिताए। जयशंकर का गॉव के प्रति रूखा व्यवहार देखकर वह चिंतित होती है। वह सोचती है, ''जब से सेहर की नौकरी लगी, कुल तीन बार ही आया। वह भी एक बार तो जबरदस्ती उसी के ब्याह के लिए बुलवाया-एक हौंस तो पूरी हो गई, उसके ब्याह की। दूसरी आस कब से लगाए हूँ, उसकी नौकरी पर बेटे बहू के साथ रहने की। उसे क्या मालूम, बस यही एक साध पर बड़को-छोटको के ताने-बाने सहती रही हूँ। एक बार सहेर गई, तो इसको कौन मंझल को पूछती है। पर जयशंकर बच्चा है न, माँ की साध क्या समझे। देखो, अबके कहा तो है ।''31 मॉ का बार-बार हल सुनकर जयशंकर विवश होकर माँ को अपने साथ शहर ले आता है। लेकिन प्रकृति के प्रांगण में, खुली हवा में जीनेवाली माँ वहाँ आते ही घुटन महसूस करती है। शहर में शौचालय तक की लाईनें देखकर उसे अचरज और क्षोभ होता है। छोटी-सी कोठरी में परदा डालकर मॉ की खटियॉ जब डाल दी जाती है तब उसे वह कोठरी एक कबुतरगाह जैसी लगती है। उसे इस छोटी-सी कोठरी में रहने में बेहयाई और बेशरमी महसूस होती है। छोटी-सी कोठरी के सभी धंधे सोचते हुए भी उसे पाप महसूस होता है। वह रात-बेरात नींद खुलने पर न करवट बदल पाती है, खाँसी भी मुँह में आँचल ठूसाकर दबाती है। वह वैसी ही अकडकर सोती रहती है। इसी कारण उसे शहर के जीवन में घुटन महसूस होती है।

माँ मूलत गाँव की प्रकृति की अभ्यस्त है। वह खुले प्रांगण में जीने की आदि है। उसे अपने गाँव और गॉव के लोगों के प्रति असीम प्यार है। इसी कारण इस तंग और सीलनभरी कोठरी में रहते हुए वह महसूस करती है कि गॉव का घर भी कोई महल नहीं है। कच्चा-पक्का ही लेकिन सभी सुख-सुविधाएँ वहॉ प्राप्त हैं। इसी कारण माँ का गाँव के प्रति प्रेम, गॉव के सहज, सरल और स्वच्छंद-जीवन के प्रति आत्मीयता और प्रकृति के प्रति प्रेम अभिव्यक्त होता है। साथ ही लेखिका ने इसके माध्यम से यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि शहर दूर से ही सुंदर दिखाई देते हैं, व्यक्ति को आकर्षित करते हैं। वास्तव में वहॉ अनेक प्रकार की

कृत्रिमता और कठिनाइयॉ मौजूद हैं। शहर में घूमते समय मॉ चारों तरफ तेजी से भागती मोटरें, रेलगाडियॉ, एक दूसरे को धकियाते हुए लोग आदि को देखती है तो वह सोचती है कि मैं अब गॉव जाऊंगी। माँ तो सिर्फ शरीर से शहर में रहती है लेकिन उसका मन हर समय गॉव में विचरण करता है। वह सपने में भी घर-बखरी, खेत-सिवान, बैलगाडी, लोकगीत, मेले, तमाशें आदि देखती है।

इस प्रकार पहले जयशंकर को शहर ले जाने के लिए हठ करनेवाली माँ कुछ ही दिनों में वहॉ का जीवन जीकर ऊब जाती है और अपने गॉव वापस आती है। जब उसे श्यामकिशोर के विवाह का संदेश मिलता है तो गॉव जाने के लिए उसे एक प्रमुख कारण प्राप्त होता है। जयशंकर स्वयं तो गॉव जाना नहीं चाहता और मॉ को भी भेजना नहीं चाहता। लेकिन मॉ उसकी एक नहीं सुनती है। वह एक छोटे बच्चे की तरह खुश होकर गॉव जाने के लिए तैयार होती है। इतना ही नहीं जयशंकर न चाहते हुए भी उसे परिवार के सदस्यों के लिए कपडे खरीदने के लिए विवश करती है। जब वह शहर से गॉव जाने के लिए बैठती है तो उसका गॉव का मन चंचल होकर गाडी के आगे कोसों मिल दौडता है। ''. .यह माया अपने बेटी-बेटे की माया से कम होती है भला ? बेटी-बेटे तो फिर भी अपने उमर-समय पर लहजबान बोल दें, मतलब साध लें, पर यह धरती माटी हमेशा अपने अंक में बुलाने को तैयार कहॉ अपने घर सिवान, कहॉ वह सहर।''[32] अनपढ माँ शहरी जीवन से ऊबकर यह सोचती है कि गॉव तो सही अर्थ में हृदय, सच्चा जीवन है।

3. सनातनी प्रवृत्ति का शिकार -

मॉ ने अपना पूरा जीवन लुकमानगंज के ग्रामीण परिवेश में गुजारा है और इस परिवेश का उसके जीवन पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है। इसी कारण वह परंपराप्रिय और संस्कृति से जुडी हुई दिखाई देती है। जब वह गॉव से पहली बार जयशंकर के घर शहर में जाती है तो उसका यह परंपराप्रिय रूढ दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है। बहू उसके लिए जब क्रिस्तानी मग्गों में चाय लाती है तो वह चाय पीना नहीं चाहती। वह अपनी प्रिय फूल के गिलास में चाय पीने की आदि है।

गॉव में रहने के कारण उसके रहन-सहन और वेशभूषा पर भी वहाँ का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसी कारण जब जयशंकर उसे शहर में घूमाने के लिए ले जाना चाहता है तब उसकी स्थिति पीड़ाजनक होती

है। वह हमेशा अपनी धोती का पल्लू आगे खिंचती है। बहू को वह धोती के बारे में पूछती है तब बहू उसे बित्ते-भर का घूंघट न काढने के लिए कहती है। यह सुनकर माँ का सीधा-सरल मन क्रोध से भर जाता है। वह झल्लाकर बहू से कहती है, "वाह रे तुम्हारा देस। औरत के लाज-धरम से, सिर-माथा ढॅककर चलने से हँसी उडती है। और रंडी पतुरियों की तरह पेट-पीठ उघाडकर चलने से इज्जत बनती है।"[33]

इससे मॉ की परंपरा के प्रति लगन दृष्टिगोचर होती है। इसके माध्यम से लेखिका ने दो पीढियों का संघर्ष चित्रित किया है। साथ ही आधुनिक नारी की स्वच्छंद वृत्ति पर भी प्रकाश डाला है। माँ तो अपना जीवन स्वभाविक रूप से जीनेवाली औरत है। उसमें कही भी प्रदर्शन की वृत्ति नहीं है। इसी कारण वह वर्तमान प्रदर्शन की प्रवृत्ति पर भी चोट करती है।

4 धर्मप्रिय माता -

मॉ को अपना गॉव ही नहीं बल्कि शहर में रहनेवाले गॉव के लोगों के प्रति भी आत्मीयता है। इसी कारण त्रिलोकी ठाकुर घर आने पर उसे अपार संतोष होता है। उनके साथ अपनी बहू का दुर्व्यवहार देखकर उसका भावुक मन घायल हो जाता है।

जब वह दूसरी बार बीमार अवस्था में शहर लाई जाती है तो उसे मिलने के लिए ठाकुर आते हैं। लेकिन बहुत दिनों तक ठाकुर नहीं आते तो उसे अनमाना-सा लगता है। उनके साथ जयशंकर का बुरा व्यवहार उसे तकलीफ देता है। जब वह जयशंकर को ठाकुर के बारे में पूछती है। तो जयशंकर झल्लाता है तब शांत भाव से वह कहती है, "कुछ नहीं, ऐसे ही पूछती थी। हनुमान चालीसा लाने को कह गए थे, 'हनुमान चालीसा और सुदरकांड का पाठ किया करो.... ले आए तो बन करू।"[34] इससे मॉ की धर्मप्रियता दृष्टिगोचर होती है। लेखिका ने इसके माध्यम से एक अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य पर भी प्रकाश डाला है। कभी-कभी वृद्ध बीमार व्यक्ति डॉक्टरी इलाजों में तंदुरूस्त नहीं होता, क्योंकि उन्हें तो मानसिक शांति की जरूरत होती है, जो उन्हें प्राप्त नहीं होती है। वह बेहोश होने पर भी बार-बार त्रिलोकी ठाकुर, हनुमानाष्टक और सुंदरकांड का जिक्र करती है।

5. ग्रामीण नारी का प्रतीक -

माँ एक अशिक्षित ग्रामीण स्त्री है। उसके व्यक्तित्व से ग्रामीणत्व झलकता

है। उसका रहन-सहन, बोलचाल, रूचियॉ, बर्ताव हर बात पर ग्रामीण वातावरण का प्रभाव है। वह अनपढ होने के कारण भी वह आधुनिकता से बिल्कुल दूर है। अत वह शहर की संस्कृति का विरोध करती है।

मॉ गॉव में रहनेवाली नारी है। गॉव का प्रभाव उसके जीवन पर पडा है। गॉव में रहने के कारण उसकी रहन-सहन और वेशभूषा पर भी वहॉ का प्रभाव पडा है। शहर में जाकर भी वह गॉव की तरह धोती का घूँघट लंबा निकालती है और बहू को भी गॉव की तरह रहने के लिए कहती है।

मॉ अपने भाई तिरलोकी ठाकुर की अच्छी आवभगत करना चाहती है। क्योंकि गॉव के लोग एक दूसरे के साथ प्यार, रिश्ता रखते हैं। उसी प्रकार ठाकुर की आवभगत वह अपने बेटे के घर में करना चाहती है। मॉ की परंपरा के प्रति लगन है। गॉव की रूढियों का पालन करना चाहती है। गॉव में प्रकृति के प्रांगण में, खुली हवा में जीनेवाली मॉ शहर जाकर भी उसी प्रकार रहना चाहती है।

6. उपेक्षाभरा जीवन -

मॉ को विधवा का दीर्घजीवन अनेक प्रताडनाओं को सहते हुए जीना पडता है। उसे एक ओर परिवार के सदस्य उलाहना देते हैं, तो दूसरी ओर अपना स्वयं का पुत्र जयशंकर।

वह अपने इकलौते बेटे जयशंकर को पढा-लिखाकर अफसर बनाना चाहती है। घरवालों के ताने सहते हुए भी वह शादी में जी लगाकर तन तोड़कर मेहनत करती है। वह एक साथ नाइन, भंगिन, मनिहारिन आदि सभी के काम अकेली करती है। शादी में उसका स्थान गौण होता है। सम्मान तो उसे बहुत कम मिलता है लेकिन काम ज्यादा। चूल्हा-चौका उसकी स्थाई दिनचर्या बन जाती है। थकान के कारण वह चूर-चूर हो जाती है। इतना सब करने पर भी किसी के मुँह से कोई अच्छा शब्द तक सुनने को नहीं मिलता है। ऊपर से छोटको के कडुवाहट भरे शब्द सुनने को मिलते हैं, ''एके बेर जिसे सहर की हवा लग गयी, उसके पैर भला गॉव में कहॉ टिके। अब उन्हें गॉव भला कहॉ से सुहाये।''[35] ऐसी अनेक बाते छोटको हर समय कहती रहती है। एक दिन दोनों का झगडा बढ जाता है। भाईजी छोटको का पक्ष लेकर उसे भली-बुरी सुनाते हैं। इससे मॉ मानसिक संतुलन खो बैठती है जो वह जीवनभर प्राप्त नहीं कर सकती।

दूसरी ओर उसका अपना सगा बेटा तक उसे समझने की कोशिश नहीं करता। वह हर समय मॉ को लेकर परेशान रहता है। कभी उसे मानसिक आधार कोई भी नहीं देता, जिसकी उसे नितांत जरूरत होती है। गॉव के परिवारवाले उसे वहाँ रखने में असमर्थता बताकर जयशंकर के पास भेजते हैं। जयशंकर न चाहते हुए भी अपने पास रखता है। इस तरह मॉ की दशा एक चलती-फिरती लाश के समान होती है। जिसे न अपना मन है, न चाह और न जीवन।

उसे बडको, छोटको, भाईजी की प्रताडनाएँ तो सहनी पडती हैं, साथ ही जयशंकर और बहू की भी। उसे समझनेवाला एक ही व्यक्ति है, उसका (माना हुआ) भाई तिरलोकी ठाकुर, जिसे जयशंकर अपने घर में अपमानित करता है। जिस बेटे को पढाकर वह अपने भविष्य को चिंताहीन बनाना चाहती थी। उसीसे ही वह धोका खाती है तो पराए लोगों से सहारा मिलना दुर्लभ ही है।

इस प्रकार सूर्यबाला ने 'मॉ' के माध्यम से भारतीय ग्रामीण नारी का परंपरागत, कर्मप्रिय, सहनशील, त्यागी रूप प्रस्तुत किया है। जो अपने जीवन को नियति मानकर जीने की असफल कोशिश करती है। साथ ही वृद्धत्व जैसी समस्या पर भी गहराई से प्रकाश डाला है।

जयशंकर -

जयशंकर 'अग्निपंखी' उपन्यास का प्रधान पुरूष पात्र है। वह लुकमानगंज जैसे ग्रामीण परिवेश में पला है। उसने 12-14 वीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। नौकरी के लिए दर-दर ठोकरें खाने के कारण उसका स्वभाव कुछ अलग ढंग का बन जाता है। परिस्थिति और व्यवस्था के कारण वह अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश है। वह गॉव में का होने पर भी गाँव का नहीं रहता है। और शहर में रहकर शहर का भी नहीं बनता है। उसका जीवन द्वंद्व में ही बीतता है। उसका मन अहंनिष्ठ बनता है। इसी कारण वह गॉव में और घर में अपनी नौकरी के बारे में जिक्र नहीं करता है।

1 बचपन और शिक्षा -

पिता की मृत्यु के पश्चात् जयशंकर का पालन माँ द्वारा होता है। 12-14 वीं तक की पढाई पूरी होने के पश्चात् उसे नौकरी के लिए इधर-उधर घूमना पडता है। लेकिन नौकरी कहीं भी नहीं मिलती है। गॉव

के लोग नौकरी को लेकर उसका मजाक उडाते हैं। तब जयशंकर झूठ-मूठ अकडकर कहता है, "(नौकरी) मिल क्यों नहीं रही ? पर मैं चाहता हूँ मनलायक मिले, तब इकठ्ठे जाउं। यह क्या कि हर चार दिन पर एक छोड, दूसरी करंड जब तक मन की, कायदे की नहीं मिलेगी, नही जाऊंगा।"[36]

जयशंकर की शिक्षा और नौकरी गाँव में एक मजाक का विषय बन जाता है। उसे नौकरी न लगने के कारण लोग यहाँ तक संदेह करते हैं कि उसने इम्तिहान ही पास न किया होगा। इसका परिणाम यह होता है कि वह घर, गाँव, रिश्तेदार आदि से कटा-कटा रहने लगता है और एक दिन किसी से कुछ कहे बिना ही गाँव छोडकर जाने लगता है तब माँ उसे पूछती है। उस समय माँ को क्रोध से कहता है, "भाग नहीं रहा हूँ घर से, समझी। कह देना उनसे भी, थाने-पुलिस के लिए ढिंढोरा न पिटवाएँ। मैं खुद ही हफ्ते-दो-हफ्ते पीछे आऊंगा, या चिठ्ठी दूंगा ।"[37]

इस प्रकार जयशंकर बचपन से हठी और आत्मकेंद्रित रहा है।

2 गॉव के प्रति अनास्था -

जयशंकर यदि चाहता तो अपने इन खाली दिनों में खेती में जी लगा सकता था परंतु उसे खेती में रूचि नहीं है। उसे अपने सभी खेत तक मालूम नहीं है। उसने कभी भी किसान का काम नहीं किया है और करवाया भी नहीं है। वह तो "साफ कपड़े पहने, हमेशा इतिहास या अर्थशास्त्र की किताब लिए यहाँ-वहाँ चक्कर मार लिया करता था। खुद उसके और दूसरों के चेहरों से भी ऐसा झलकता जैसे जयशंकर तुलना में उन लोगों से कई पीढ़ी ऊपर है। उसकी और इन जोतने, बोने, दांवने, सुखानेवालों से कोई बराबरी नहीं।"[38] इस प्रकार उसमें खेती में रूचि ही नहीं, बल्कि खेती करनेवालों के प्रति भी घृणा दिखाई देती है। उसे लगता है अगर मैं खेती में काम करना शुरू कर दूँ तो बाकी लोग मुझे हँसेंगे। खेती करना उसे छोटा कार्य लगता है। इसी गलतफहमी के कारण वह गॉव से शहर जाना पसंद करता है। उसे अपनी बूढी माँ का ख्याल तक नहीं रहता है। गाँव-जीवन में स्थिर न हो पाने के कारण उसके मन में गॉव के साथ-साथ गॉववालों के प्रति भी नफरत पैदा होती है।

जयशंकर शहर में अपने गाँव या प्रांत के किसी भी व्यक्ति से संबंध नहीं रखता है। उसे गाँव और गॉववालों के प्रति प्रेम, रूचि न के बराबर है। जब माँ उसे कहती है कि त्रिलोकी ठाकुर आ गए थे। तो उस

पर कुछ भी असर नहीं होता है। तब वह चाहती है कि परदेश में अपने रिश्ते-नाते के लोगों के साथ मिल-जुलकर रहना अच्छा है। उस पर जयशंकर झुँझलाकर कहता है, ''नहीं मुझे किसी से व्योहार नहीं बनाना है, और तुम्हें भी ज्यो व्योहार बनाना हो, गॉव जाकर बनाना।''[39]

जयशंकर गाँव के लोगों से कटा-कटा रहता है। उसे गॉव के लोगों से संबंध रखना अच्छा नहीं लगता है। इसके पीछे उसकी मानसिकता है। अर्थाभाव, शिक्षित होकर भी कम सम्मान और कम आय की नौकरी उसे खलती है। अंत में बीमार अवस्था में माँ जब उसे गॉव जाने का जिक्र करती है तो उसका रोष व्यक्त होता है। वह ताव खाकर चिल्लाता है, ''चुप करो, अपना पाखंड मेरे सामने मत झाडो। वह तुम्हारे पुरखों की थाती मेरी जिंदगी का कतरा-कतरा चूस चुकी है। कभी मुझे एक पल का चैन तुमने या उसने न लेने दिया। अब कान खोलकर सुन लो-जिओगी भी तो यहीं, मरोगी भी तो यहीं। और मर जाओगी, तो तुम्हारी मिट्टी भी वहाँ नहीं जा सकती .।''[40]

3 अर्थाभाव से पीडित -

जयशंकर लगन से पढाई पूरी करता है। इसके पश्चात् उसे नौकरी तो नहीं मिलती, गॉव तथा घर के लोगों के ताने मात्र अवश्य मिलते हैं। इसी कारण वह त्रस्त एवं विवश होकर शहर में एक फैक्टरी में नौकरी करना तय करता है। वह वहॉ एक छोटी-सी कोठरी में अपनी पत्नी के साथ रहता है। मॉ के हठ के कारण वह मॉ को अपने साथ ले आता है। मॉ शहर आने पर जयशंकर का छोटा-सा घर, वहाँ की घुटन, शौचालय के लिए लाईन आदि बातों से परेशान होकर उसके सामने जिक्र करती है। तब जयशंकर उसे कहता है, ''यहॉ का चलन ही यही है। मैं कोई देस थोडे ही बदल सकता हूँ। बडे शहर में सब नौकरीवालों के ऐसे ही घर होते हैं।''[41] अर्थाभाव के कारण ही वह अच्छे मकान में नहीं रहता।

मॉ गॉव जाते समय जयशंकर से परिवारवालों के लिए कपड़े लेकर जाना चाहती है। वह माँ को ना भी नहीं कह सकता है। तब वह अपनी पत्नी से अपनी समस्याओं का जिक्र करता है, ''तीन महीने से अपने लिए जूता नहीं खरीद पाया। अभी लोकल का पास अलग बनवाना है। महीने के बचे पूरे दस दिन का खर्चा-पानी .. पर इसे कौन समझाए। इसके लिए सबसे जरूरी चंदा की फ्राक ही है। पाँच हजार का वीमा

कराया, वह भी कभी टाइम पर किस्त न जमा कर पाया।''[42] मॉ की बीमारी का इलाज करना भी उसके बस की बात नहीं है। माँ जब बीमार थी तब जयशंकर मॉ को अपने साथ ले जाता है। मॉ को गॉव वापस भेजते समय वह मॉ को गॉववालों से अपनी असलियत छिपाकर रखने की सूचना देता है और माँ की दवाइयों के पैसे बचाकर अपनी बेटी के लिए मिल्कपाउडर लाता है।

जयशंकर शहर में आर्थिक तंगी के कारण ही रिश्ता जताना नहीं चाहता। क्योंकि उसके पास एक कोठरी है और उसमें बाहर के लोग आऍगे तो उसका रूतबा सभी के सामने झूठ होगा। इस तरह वह बाहरी रूप में अपना अभाव दिखाना न चाहते हुए भी अंदर से पूरी तरह टूट चुका है। एक ओर पत्नी और दूसरी ओर माँ दोनों के बीच उसकी अवस्था अत्यंत पीडादायक होती है।

4 असफल विद्रोही व्यक्ति -

जयशंकर क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति है। वह जमीन को लेकर परिवारवालों से भी झगडा करता है। वह चाहता है कि मेरे जमीन के हिस्से के बदले परिवारवाले माँ का पालन करें। लेकिन उसका यह विद्रोह कोरा है। जब परिवारवाले मॉ को सॅभालने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं तो वह कहता है, ''क्यों नहीं रह सकती ? घर सिर्फ आप ही लोगों का नहीं है। जमीन-जायदाद में मेरा भी तो हिस्सा है और मैं अपने बाप का अकेला हूॅ।''[43] वह कहने को तो यह कहता है लेकिन कहते-कहते वह कई बार हकलाता है और पसीना-पसीना हो जाता है। उसकी यह बात सुनते ही दोनों बाबू उस पर टूट पडते हैं। श्यामकिशोर जैसे-तैसे झगडा मिटाता है। बाबू उसे अपना हिस्सा कोर्ट-कचहरी से लेने को कहते हैं। तब जयशंकर की अत्यंत दयनीय स्थिति होती है, ''सिहर उठा था वह। इतनी आतंकभरी और हिंस्त्र प्रतिहिंसा की कल्पना नहीं थी उसे। पसीने से नहाया, थरथराता-सा वह एक ओर बैठ गया और बदहवासी में उसे अपनी खुद की लाश गॉव की गडहिया और पोखर में उतरती नजर आ रही थी। अपने निहत्थेपन के इस दयनीय एहसान से वह अंदर-अंदर फिर आतंकित हो उठा।''[44] इस तरह उसका विद्रोह असफल साबित होता है। जयशंकर विद्रोह तो करता है लेकिन उसमें जोश का अभाव है। वह अपने आप को लाचार और निहत्था महसूस करता है। यहॉ उसके मनोबल की कमी भी दृष्टिगत होती है।

5 क्रोधी स्वभाव -

जयशंकर मॉ को अपने घर शहर में पहली बार ले आता है तब आते ही मॉ के साथ बुरा व्यवहार करता है। मॉ जब दिशा-मैदान हो आना चाहती है तब वह पत्नी से मॉ को लाईन में खड़ा करने के लिए कहता है। तब गॉव के परिवेश में रहनेवाली मॉ बौखला उठती है। जयशंकर उसे समझाने की अपेक्षा तमककर बोलता है, "यह सहर है, सहरा। गॉव नहीं कि जहॉ हुआ लोटा लिए बैठ गए। सहर का कायदा रहते-रहते सीखोगी। सीधे चली आ रही हो देहात से, न कुछ जानो, न बूझो और मेरे दिमाग की दवा बता रही हो, पता नहीं, अभी कितने दिन तुम्हारे साथ सिर खपाना पडेगा।"[45] इस तरह जयशंकर मॉ के साथ प्रेम की अपेक्षा बेरूखी से व्यवहार करता है। वह जब दिनभर काम से ऊबकर घर लौट आता है तब घर में छोटी-छोटी बातों पर मॉ तथा पत्नी पर गुस्सा हो जाता है।

मॉं शहरी जीवन से ऊबकर जब गॉव जाने की बात जयशंकर से कहती है। तो वह आग बबूला हो उठता है। पुरखों, परिवार और गॉव को कसाईबाडा कहता है। अपने जीवन की इस अवस्था को मॉ, घर और गॉव को ही जिम्मेदार मानता है। यह सुनकर मॉ रोने लगती है, तब वह उसे चुप करने की अपेक्षा ताव खाकर मॉं पर झपटता है। बहू दौडकर उसे छुडाती है। तब वह कहता है, "ले जा इसे। डाल दे खटोली पर। मेरी आँखों से दूर कर, नहीं तो मैं हाथ चला बैठूंगा।"[46] इस प्रकार वह अपनी मॉ के प्रति व्यवहार करता हुआ दिखाई देता है। वह अपने अभाव और कमी का कारण दूसरों को मानता है।

6. संवेदनहीनता -

अर्थाभाव और अभिशप्त जीवन के कारण उसके अंदर की संवेदना लुप्त हो जाती है। मॉ की इतनी नाजुक बीमारी में भी वह उससे गुस्से में बाते करता है। एक बार तो मॉ को धकेल तक देता है। जब मॉं बेहोश होकर जीवन के अतिम क्षण गिनने लगती है, तब वह थरथराता है, घबराता है। मॉ के जीवन के प्रति आशंकित हो उठता है। लेखिका के शब्दों में - "पता नहीं किसकी आशंका।

मृत्यु की ?

या जीवन की ?"[47]

इससे यह बात स्पष्ट है कि अर्थाभाव, शहरी अभिशप्त जीवन, संत्रास, हीनता ग्रंथी, घुटन आदि के कारण जयशंकर के अंदर का इंसान ही मर चुका है। अर्थाभाव, अच्छी नौक़री न मिलना, परिवारवालों को रूखा व्यवहार और शहर में अभिशप्त जीवन जीने की विवशता आदि के कारण जयशंकर का चरित्र संवेदनाशून्य दिखाई देता है।

7. हीनता-ग्रंथी से पीडित -

जयशंकर अर्थाभाव में जीवन जीता है। लेकिन उसके मन की यह चाह है कि अपनी कमियॉ किसी के सामने प्रकट नहीं हो। इसी कारण गॉव जाते समय मॉ को गाडी में बिठाता है तो वह कहता है, ''जा रही हो तो अब तो गॉव में घर-घर जाकर बॉटोगी, कहोगी न कि जयशंकर चार हाथ के कुटिले में रहता है। पहर सुबह से घडी-रात तक मशिनों के चक्कों के साथ खटता है। कडुवाती चाय पीता है। अरे कहॉ की अफसरी . न ढग का खाना, न पीना वही धुंधआती चाय और कारखानों की चक्की के साथ पिसते जाना कहोगी न यह सब।''[48] इससे उसकी हीनता-ग्रंथी ही व्यक्त होती है। वह अनेक अभावों में जीता है लेकिन दूसरे के सामने यह प्रकट हो यह उसे अच्छा नहीं लगता है। वह इस अभिशप्त जीवन को विवश रूप में, नियति समझकर जीना चाहता है। उसके मन में एक क्षोभ है कि शिक्षित होकर भी उसे अच्छी नौकरी नहीं प्राप्त होती है। परिणाम स्वरूप स्वयं को छोटा मानना भी उसे मंजूर नहीं है। लेखिका ने यहाँ शिक्षित होने पर अर्थाभाव तथा अच्छी नौकरी न मिलने के कारण त्रस्त व्यक्ति की मानसिकता का सफलता से चित्रण किया है।

लेखिका ने जयशंकर के माध्यम से एक ऐसे चरित्र की निर्मिति की है जो शिक्षित तो है लेकिन सुसस्कृत नहीं है। इसके अभाव में वह न गाँव में हिलमिल सकता है और न शहर में समायोजन कर सकता है। वर्तमान पीढी के युवकों का अपने माता-पिता के प्रति रूखा व्यवहार भी लेखिका ने जयशंकर के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जयशंकर के इस रूखेपन के पीछे कुछ हद तक व्यवस्था भी कार्य करती है।

3 2.2 सहायक पात्र -

'दीक्षांत' उपन्यास में शर्मा सर एक ही प्रमुख तथा मुख्य पात्र है। इस पात्र के चारित्रिक विकास हेतु उपन्यास में अन्य पात्रों की योजना हुई है। उनमें कुंती, राजदान और डिसूजा सहायक पात्र के रूप में आए हैं।

कुंती -

शर्मा सर के व्यक्तित्व - विकास में कुंती का भी योगदान रहा हैं। पत्नी तथा माता के रूप में कुंती हमारे सामने उपस्थित है। इन्हीं रूपों के आधार पर उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित बताई जा सकती हैं।

1. आदर्श और स्वाभिमानी पत्नी -

आदर्श पत्नी वही कहलाती है जो अपने पति के सुख और दु:ख में बराबर का साथ देती है। पति अगर किसी परेशानी से त्रस्त हो तो उसे दिलासा देती हो। उसके दु:खों को, परेशानियों को दूर करने की कोशिश करती हो। इस मामले में कुंती एक आदर्श पत्नी के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती है। शर्मा सर की नौकरी स्थाई नहीं है। शर्मा सर ट्यूशन लेते हैं। उस समय शर्मा सर उसे बताते कि ट्यूशन खत्म होने पर मिसेज ठक्कर द्वारा कोई ना कोई काम बताया जाता है, तो कुंती का स्वाभिमान जागृत होता है। वह ताव में आ जाती है। वह नहीं चाहती कि ट्यूशन के आड में कोई उसके पति को अपना घरेलू काम करवाए। वह तैश में आकर कहती है, ''धन्नासेठ होंगे अपने घर के, साफ मना कर दिया करो, मासटर हो, पढ़ाने जाते हो, चाकरी बजाने थोडी।''[49] कॉलेज के लडके, विभागाध्यक्ष गुप्ता, प्राचार्य तथा मैनेजमेंट के लोगों के कारण शर्मा सर अनंत समस्याओं से घिरा होने के कारण परेशान हो जाता है। तब कुंती अपनी बातचित द्वारा शर्मा सर को धैर्य देने का प्रयास करती रहती है। जितना वेतन मिलता है उसी में परिवार का खर्चा चलाती है।

नारी पुरूष की प्रेरणा होती है। कुंती भी इस के लिए अपवाद नहीं है। वह अपने पति को अन्याय का डटकर सामना करने का हौसला प्रदान करती है। शर्मा सर डिसूजा द्वारा कही गई बात उसे बताते हैं तब उन्हें धीरज बँधाते हुए कहती है, ''तुम्हारे पास सबसे ऊंची डिग्री है, डरते क्यों हो ? जीवट से आगे बढो, परिस्थितियों का सामना करो, मेनेजमेंट, प्रिंसिपल के पीछे लगे रहो, जुझते रहो, देगे कैसे नहीं, उन्हें देना ही पडेगा।''[50]

इतना ही नहीं शर्मा सर की मृत्यु के पश्चात् स्टाफ के अध्यापक छात्र उनका अंतिम संस्कार करने हेतु उनके घर जाते तब कुंती उन्हें अपने पति के शव के पास तक भटकने नहीं देती। क्योंकि उनकी वजह

से ही शर्मा सर की मृत्यु हुई है। इस प्रकार कुंती आदर्श और स्वाभिमानी पत्नी है।

2. सहानुभूतिशील तथा मिलनसार पत्नी -

कुंती अपने पति से सहानुभूति रखती है। शर्मा सर की परेशानियाँ दूर करने के लिए उसे दिलासा देती है। शर्मा सर को ट्यूशन से लौटते देर होने पर कुंती सहानुभूति से शर्मा का धीरज बँधाती है।

भारतीय नारी पति को ईश्वर तुल्य मानती है और पति से दिलोजान से प्रेम भी करती है। वह चाहती है कि उसका पति सभी परेशानियों से दूर रहे। वह सदा हँसता और आनंदी रहे। कुंती भी भारतीय नारी है । अत· चाहती है कि उसका पति सदा सुखी तथा आनंदी रहे। आर्थिक विपन्नता के कारण शर्मा कभी हँसता नहीं या खुशी उसके चेहरे पर नहीं आती है तब कुंती शर्मा को परेशानियों से दूर रखने के लिए कहती है। जब शर्मा सर को मिसेज गुलाटी के डिग्री क्लासेस मिलने की संभावना नजर आती है, तो वह खुश हो जाते हैं और खुशी-खुशी अपने घर आते हैं। कुंती को अचरज होता है कि उसके पति में इतना उत्साह कैसे निर्माण हुआ और दिल से यही चाहती भी है। पति के पूछने पर कि मैं खुश लगता हूँ कि नहीं ? वह कहती है, ''हॉ, ऐसे ही रोज रहा करो ..।''[51] और उसकी ऑखों में अपरिमित लाड और समर्पण तैरने लगता है।

पति के संदर्भ में कोई बुरी घटना घटित होती है या ऐसा सुनने मिलता है तो वह घबरा जाती है। इसके बारे में पति से पूछती है कि, ''तुम ठीक तो हो.. ज्यादा चोट तो नहीं आई . यह सब क्या हो गया . मेरे तो हाथ-पॉव जैसे सुन्न होने लगे ये सुनकर ।''[52] तात्पर्य यह कि कुंती अपने पति शर्मा सर से अत्यधिक प्रेम करती है।

कुंती अपने पति के स्वभाव की अच्छी तरह से पहचान रखती है। इसी कारण घर में संघर्ष उपस्थित नहीं होता। जब शर्मा सर अपना छोटा बेटा बिल्लू ड्रामें में नौकर बना है यह सुनते तब उन्हें चीढ आती है। पति के चेहरे के बदलते भावों को देखकर उनका दिल रखने के लिए कुंती तुरंत कहती है, ''बिल्लू कहता था, कितने लडके चाहते थे, ड्रामें में पार्ट लेना पर नौकखाला पार्ट सबसे अच्छा यही करता था, इसलिए टीचर ने कहा विमल भूषण बहुत अच्छा करता है यह पार्ट और फिर ड्रामा तो ड्रामा . इसमें राज, रंक बनने से थोडा ही कोई फर्क

पडता है।''[53] तात्पर्य यह कि कुंती जानती है कि अपने बेटे द्वारा ड्रामें में नौकर का पार्ट करना भी शर्मा सर को अच्छा नहीं लगेगा। इस प्रकार कुंती स्वभाव पहचाननेवाली औरत है।

3. माता के रूप में कुंती -

कुंती अपने दोनों पुत्रों से प्रेम तथा स्नेह रखती है। इनसे कोई गलती होती है तो इन्हीं का पक्ष लेती है तथा उनके पिता के क्रोध से उन्हें बचाने की कोशिश करती है। जब विनय को परीक्षा में कम अंक मिलते हैं तब कुंती इस संदर्भ में पति से बातचीत करती है, तो शर्मा सर विनय पर क्रोधित होते हैं। उसे पीटना चाहते हैं। परंतु कुंती विनय का पक्ष लेते हुए कहती है, ''पेपर तो ठीक ही हुआ, कहता था. खुश था, पर आज देखा, बस्ता कोने में रखकर धीमे से रिपोर्ट कार्ड जैसा कुछ देख रहा था। छिपाकर, उदास भी बहुत लग रहा था 'न', अभी कुछ न कहना उसे. .।''[54] इस तरह कुंती विनय को पति के क्रोध से बचाती है।

कुंती और शर्मा सर का छोटा बेटा स्कूल के ड्रामें में काम कर रहा था और वह चाहता था कि ड्रामा देखने उसके माता-पिता उपस्थित रहे। परंतु शर्मा सर मना करते हैं। कुंती अपने बेटे का अभिनय देखना चाहती है, इसलिए वह ड्रामा देखने जाती है। शर्मा सर के इन्कार करने पर कुंती को बेटे की चिंता लगी रहती है, जैसे - ''बच्चे के पास जल्द-से जल्द पहुँच पाने की ममता भरी लडखडाती उतावली, बिल्लू की ऑखे रह-रहकर हाल में मॉ-बाप को ढूँढती होगी।''[55] कुंती अपने बेटे का कर्तृत्व अपनी ऑखों से देखना चाहती है।

इस प्रकार कुंती आदर्श और स्वाभिमानी पत्नी है। पति के साथ सुख और दु ख में रहती है। पति से बेहद प्यार करती है, उसी प्रकार अपने बच्चों को भी प्रेम करती है।

प्रिंसिपल राजदान -

1. प्रिंसिपल के रूप में राजदान -

प्रिंसिपल का कर्तव्य होता है कि अपने कॉलेज में पढानेवाले अध्यापकों की मदद से कॉलेज में अनुशासन बनाये रखे। छात्रों की उद्दंडता और आवारगीपूर्ण व्यवहार पर उन्हें समझाए अगर न समझे तो सजा दे। कॉलेज का नाम रोशन कर दे। राजदान 'राधिका देवी बिसारिया कॉलेज' में प्रिंसिपल है। परंतु वे कॉलेज में कोई भी विकास कार्य नहीं करते और न ही छात्रों में अनुशासन निर्मिति के लिए प्रयास करते हैं। शर्मा सर रतन

बरूआ को फेल कर देते हैं। सभी अध्यापक बरूआ का पक्ष लेते हैं, उस समय प्रिंसिपल बरूआ का पक्ष लेते हैं। अध्यापक को बताया जाता है कि उसके पिता द्वारा कॉलेज को डोनेशन मिलता है, अत उस लडके को फेल करना गलता है। छात्रों में अनुशासन न होने के कारण छात्र अध्यापकों से उद्दंडता से पेश आते तब प्रिंसिपल उनका ही साथ देते हैं। तात्पर्य यही है कि प्रिंसिपल ही अनुशासनहीन रहने के कारण कॉलेज में पूरी तरह उद्दंडता फैली हुई है।

2 लाचार राजदान -

राजदान प्रिंसिपल है, फिर भी उनके पास जो अधिकार हैं उन अधिकारों का वे अपनी इच्छा से प्रयोग नहीं कर सकते। बरूआ जैसे लडकों की उद्दंडता पर उसे सजा देनी है। परंतु राजदान बरूआ के पिता द्वारा कॉलेज को बहुत बडी मात्रा में डोनेशन मिलता है। इस कारण वे उसे दंडित करना तो दूर उल्टा उन्हीं का पक्ष लेकर शर्मा सर को डॉटते हैं। अपना पद संभालने के लिए वे लाचारी से मैनेजमेंट की हर बात मानते हैं। इस लाचारी के कारण ही शर्मा जैसे आदर्श उसूलवाले अध्यापक को रेजीग्नेशन देने को कहकर सिर्फ एम् ए पास किसी मंत्री के भॉजे को उनकी जगह देने का निर्णय लेते हैं। उनकी पत्नी तोषी राजदान उन्हें उनके अधिकारों के प्रति सजग करने का प्रयास करती है तब वे कहते है - ''प्रिंसिपल के अधिकार और दायित्व फेहरिस्त कचरे भर भी नहीं रह जाती, अगर विद्यालय का चेअरमैन सीधे-सीधे सुबह उसके पास फोन मार दे कि फला-फला से फला-फला इक्सक्यूज से इस्तीफा ले लो।''[56] तात्पर्य यह कि अपने पद और अधिकार को बचाने हेतु प्रिंसिपल राजदान मैनेजमेंट के सामने लाचार बनकर रहते हैं।

3 असहाय राजदान -

महाविद्यालय का मैनजमेंट अपने निर्णय राजदान पर थोपती है। कॉलेज में किसे रखा जाए या किसे निकाला जाए इन बातों पर निर्णय मैनेजमेंट ही लेती है। अत इन निर्णयों के कारण उपस्थित होनेवाली समस्याओं को राजदान को ही सुलझाना पडता है। उस समय उनकी मदद करने कोई नहीं आता तब राजदान असहाय हो जाते हैं। वे परेशान होते तब उनकी पत्नी कहती है कि आप मैनेजमेंट के निर्णय के सामने क्या कर सकते, परेशान होने की आवश्यकता नहीं। तब वे कहते है की सामना तो मुझे ही करना पडा।

मैनेजमेंट के आदेश पर राजदान शर्मा सर को कॉलेज से निकालने का निर्णय लेते हैं। तो इसका परिणाम यह होता है कि छात्र उधम मचाते हैं, राजदान के खिलाफ नारे लगाते हैं। राजदान परेशान है, क्योंकि एक तरफ शर्मा अस्पताल में चिंताजनक स्थिति में है, तो दूसरी तरफ छात्रों से परेशान हैं। छात्रों में यह बात फैल जाती है कि शर्मा सर कॉलेज कमिटी की कूटनीति का शिकार हुए हैं। राजदान से लडकों की पूछताछ पर वे अनभिज्ञता प्रकट करते हैं। तब एक छात्र उद्दंडता से कहता है, "तब आप प्रिंसिपली क्या खाक कर रहे हैं ? सारे कॉलेज को राजनीति का आखाडा ।"[57] तात्पर्य यह है कि राजदान मैनेजमेंट और छात्रों से परेशान है। इसी कारण असहाय बने हैं।

4. मैनेजमेंट के हाथों की कटपुतली -

वर्तमान युग में शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापकों को मैनेजमेंट के हाथों की कटपुतली बनकर रहना पडता है। अध्यापकों को मैनेजमेंट से संबंधित किसी भी विद्यार्थियों को सजा देने की अनुमति नहीं होती है। अगर किसी ने विद्यार्थियों को सजा देने की गलती की हो तो उनकी नौकरी धोखे में आती है। उन्हें अपनी इच्छा, आशाओं का दमन कर जीवन बीताना पडता है। मैनेजमेंट की प्रत्येक बात माननी पडती है।

प्रिंसिपल राजदान भी मैनेजमेंट के हाथों की कटपुतली बन गए हैं। अपनी इच्छा तथा आकांक्षाओं को दबाकर, अपना मन मसोसकर गलत आदेश पर भी उन्हें अमल करना पडता है। शर्मा सर एक उच्चविद्या विभूषित हैं, वे अच्छे पढाते भी हैं। परंतु मैनेजमेंट के कारण उन्हें नौकरी से निकाला जाता है तब प्रिंसिपल उनके अधिकारों का प्रयोग कर उनके इस्तीफे को नामंजूर कर सकते थे। परंतु अपनी नौकरी चली जाएगी इसी कारण वे मैनेजमेंट के आदेशों का पालन करते हैं। उनका कॉलेज कमिटी के संदर्भ में विचार है, "अश्वमेध नहीं इसे नरमेध कहते हैं और इस तरह के नरमेध आजकल कुछ जादा चौकानेवाली चीज नहीं रह गए है।"[58]

प्रिंसिपल राजदान परिस्थिति के साथ समझौता करते हुए अपना जीवन बीताते हैं। नौकरी और करिअर का विचार कर वे मैनेजमेंट का आदेश मानते हैं। उनकी पत्नी उनके अधिकारों के संबंध में बात करती है तथा बताती है कि एक प्रिंसिपल के नाते वे शर्मा सर के संदर्भ में खुद निर्णय ले सकते थे, मैनेजमेंट का विरोध कर

सकते थे, तब प्रिंसिपल राजदान कहते हैं , ''इस विरोध का परिणाम कुल मिलाकर यही होता कि अपने करिअर के लिए हमेशा का एक खटका जरूर पाल लेता . ब्लैक लिस्टेड हो जाता और एक बार मैनेजमेंट की आँख किरकिरी बनने के बाद अपनी गद्दी संभालना बेहद जहालत भरा काम हो जाता है।''[59] इस प्रकार प्रिंसिपल राजदान मैनेजमेंट के हाथों की कटपुतली बनकर परिस्थिति से समझौता करते हैं।

तात्पर्य यह कि प्रिंसिपल राजदान को अपने कर्तव्य को पूरा करते समय लाचार, असहाय बनना पडा है। नौकरी संभालने के लिए राजदान को मैनेजमेंट के हाथों की कटपुतली बनना पडता है।

डिसूजा -

'दीक्षांत' के प्रमुख पात्र शर्मा सर के एक सच्चे मित्र तथा शुभ-चिंतक होने के नाते उपन्यास में इस पात्र के चारित्रिक विशेषताओं का चित्रण जितना होना चाहिए था उतना नहीं हुआ है। उपन्यास में चित्रित प्रमुख पात्र शर्मा सर जब भी जादा परेशान होते हैं तब उन्हें वास्तविकता की पहचान कराने का काम डिसूजा करते हैं। शर्मा सर से ईर्षा करनेवाले गुप्ता जब शर्मा को तरह-तरह से परेशान करते हैं तब शर्मा को इस बात पर आश्चर्य होता है कि गुप्ता क्यों उसे जगह-जगह टोकते और परेशान करते हैं। तथा उनकी सभी अध्यापकों के सामने आलोचना करते हुए उन्हें अपमानित करते हैं, तब डिसूजा ही उन्हें बताता है, ''उसका मारे कुढन से बुरा हाल है आजकल....।''[60] इस बात से स्पष्ट होता है कि गुप्ता शर्मा सर से ईर्षा करते हैं। इतना ही नहीं छात्रों को गुप्ता द्वारा यह बताया जाता है कि वे शर्मा सर को परेशान करते हैं। इस बात की जानकारी भी डिसूजा ही शर्मा सर को देता है।

शर्मा सर अनंत समस्याओं का सामना करते-करते अपना आत्मविश्वास खो चुके हैं। अत: उनके खोए आत्मविश्वास को वापस लाने का काम भी डिसूजा करता है। एक सच्चे मित्र की तरह उन्हें समझाते हैं, '' थोड़ा जोश, थोडा साहब थोडा और जीवट हॅसते-हँसते सहमते उठा लेनेवाला, समझे यह सब जरूरी है। तुम समझते क्यों नहीं यह सब मिलाकर आदमी में आत्मविश्वास भरते हैं और जीने के लिए आत्मविश्वास कितना जरूरी है, यह तुम्हें बताने की जरूरत नहीं।''[61] तात्पर्य यह कि डिसूजा के व्यक्तित्व में एक सच्चे मार्गदर्शक के गुण भी हैं। वे आत्मीयता से शर्मा सर को परेशानियों से दूर करने की कोशिश करते हैं।

डिसूजा एक सहृदय व्यक्ति है। दूसरों पर अन्याय तथा अत्याचार होते नहीं देखता। परंतु अपने-आप में क्षमता न होने के कारण उसका विरोध भी नहीं करता। जहॉ-तहॉ शर्मा सर को ढॉढस बंधाने का काम करता है उसके व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि उसे वास्तविक परिस्थिति की जानकारी प्राप्त करने का चाव है। उसी प्रकार कॉलेज की गुप्त बातें भी उसे ज्ञात होती हैं। एक सहृदय व्यक्ति तथा सच्चा हितचिंतक और दोस्त होने के नाते वह शर्मा सर के खोए आत्मविश्वास को वापस लाने की कोशिश करते हुए उनका मार्गदर्शन भी करता है। कुल मिलाकर डिसूजा एक अच्छे व्यक्ति, मार्गदर्शक और सच्चे मित्र के रूप में उपन्यास में चित्रित हुए हैं। और यह उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ बतायी जा सकती हैं।

चिन्हा (बहू) -

'अग्निपंखी' उपन्यास में 'मॉ' और 'जयशंकर' के पश्चात् जयशंकर की पत्नी अर्थात 'चिन्हा' एक सहायक पात्र का भी चित्रण हुआ है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं -

1. स्वच्छंदी वृत्ति -

चिन्हा अच्छे परिवार की लडकी है। उसमें आधुनिक फैशनपरस्ती और सुविधापूर्ण जीवन जीने की ललक है। वह गॉव में रहना नहीं चाहती। शहर में अपने पति, बच्चे के साथ रहना पसंद करती है। उसे घर में अपने पति और बच्चे के अलावा कोई व्यक्ति रहना उसे अच्छा नहीं लगता है। चिन्हा अपनी अनपढ सास को शहर में अपने पास लाना नहीं चाहती है। इसके पीछे आवास की कमी से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कारण सास के बुढापे का झंझट है। सास जब शहर आएगी तो वह बहू पर नजर रखेगी। सास का कहना मानना पड़ेगा। इसी कारण बहू सास को अपने साथ शहर लाना नहीं चाहती। वह सिर्फ अपने पति और बच्ची के साथ स्वच्छंदी जीवन जीना चाहती है।

2. आत्मकेंद्रित आधुनिक नारी -

जयशंकर की पत्नी आत्मकेंद्रित नारी है। वह सिर्फ अपने पति और बच्चे के साथ रहना चाहती है। सास जब गॉव से शहर जाती है तब सास के साथ बेरूखी का व्यवहार करती है। सास उसे बोझ

लगती है। जयशंकर से सास की बातें कहती है। अपने ससुराल में किसी के साथ संबंध नहीं रखना चाहती है। परंतु जब सास बीमार होने के बाद शहर में उनके पास लाई जाती है तब सास की सेवा करती है। परंतु यह सेवा मन से नहीं करती तो उसे एक बोझ समझती है।

सास जब बीमारी में फटी लुगरी पहनकर दरवाजे पर बैठती है। उस समय जयशंकर को बहुत क्रोध आता है। वह अपनी पत्नी पर क्रोध उतारता है। उस समय बहू चिल्ला पडती है, ''हाथ मत उठाना मेरे ऊ पर। नहीं सुहाती तो चुपचाप मुझे मेरे माँ-बाप के घर पहुँचा दो। उनमें अभी भी मुझे पालने-पोसने का बूता है। यहाँ अपने से ज्यादा अपनी औलाद की फिकर मुझे मारे डाल रही है। फूल-सी बच्ची को लेकर आई थी और अब सूखकर कांटा हो गई है। धिक्कार है ऐसी जिंदगी को। माँ होते हुए मैं हत्यारिन से बढकर हो गई और तुम्हें क्या कहूँ तुम्हें. तुम्हारी राजगद्दी तुम्हारा रूतबा, मुबारक रहे, पर मुझमें अब और दमखम नहीं तुम्हारी गिरस्ती ढोने का।''[62]

इससे बहू का आधुनिक नारी का रूप दृष्टिगत होता है। जो अपने घर होनेवाले अन्याय को नहीं सह सकती है। उसमें अब अधिकार बोध या नई चेतना दृष्टिगत हो रही है। वह अब बराबरी चाहती है। साथ ही सुखी जीवन जीना चाहती है। साथ ही घुटनभरा, संत्रासयुक्त जीवन जीने की अपेक्षा उस संबंध को ही तोडना चाहती है।

3. सास के साथ बेरूखा व्यवहार -

बहू को माँ का रहन-सहन अच्छा नहीं लगता है। इसी कारण शहर घूमने जाते समय माँ जब धोती के संबंध में पूछती है तब वह कहती है, ''कोई भी पहनो। बस बित्ते-भर का टोंट (घूंघट) मत काढ लेना अगल-बगल में हमारी हॅढ्यी उडेगी।'' इस प्रकार वह अपनी स्वच्छंदता और परिवर्तित रहन-सहन का प्रभाव माँ पर डालना चाहती है। इस बात से दोनों में झगडा होता है और वह बेचारी माँ को रूला देती है। वह माँ के खाने-पीने की सुध तक नहीं लेती है। माँ के सामने थाली में इकठ्ठी रोटी डालकर स्वयं पडोसियों के यहाँ गप्पे लडाती है। जब माँ के मुँहबोले भाई तिरलोकी ठाकुर माँ से मिलने आते हैं तो वह कूंडा खटखटाकर जयशंकर के बारे में पूछते हैं तो बहू बेरूखी से कहती है, ''नहीं है। शाम को दिया जले आते हैं।''[63] और दरवाजा बंद करने

लगती है। मॉ अंदर से पहचाना स्वर सुनकर उन्हें अंदर बुलाती है तो बहू आग-बबूला होती है। अंदर-ही-अंदर कुढती रहती है। जान-बूझकर ठाकुर जल्दी घर से निकल जाए, इसलिए जयशंकर का 'ओवर-टाईम' होने का झूठ बतलाती है।

इससे बहू की नीडरता और विद्रोही वृत्ति के साथ ही घुटन भी व्यक्त हुई है। दोनों ऊपरी तौर से सहज जीवन जीने की कोशिश करते हैं लेकिन अंदर से बुरी तरह टूट गए हैं।

लेखिका ने बहू के माध्यम से अपने ही घर में जीनेवाली, रिश्तेदारों के प्रति रूखा व्यवहार करनेवाली आधुनिक शहरी नारी का चित्रण किया है।

3.2.3 गौण पात्र -

'दीक्षांत' उपन्यास में गौण पात्रों के रूप में चंद्रभान सिंह, तोषी राजदान, टक्कर की बीवी, विमल, विनय, रतन बरूआ, मि. गुप्ता, यादव, बंसल, सेनगुप्ता, मिसेस सब्बरवाल, कमलेश पाडे, रीना सूरी, निखिलादास, लाखनसाव आदि आते हैं। इनका चरित्र चित्रण उतनी अधिक मात्रा में नहीं हुआ है। प्रो. शर्मा का चित्रण करने में ये सहायक बने हैं।

चंद्रभान सिंह अपने-आप में मस्त रहनेवाले व्यक्ति है। उन्हें सब डरते हैं। लडके तो डरते ही हैं, साथ में अध्यापक और प्रिंसिपल भी उन्हें डरते हैं। कॉलेज में पढनेवाला प्रत्येक छात्र उनका कृपापात्र बनने की इच्छा से उनके आगे-पीछे घुमता रहता है। उनके द्वारा बताए काम करते हैं। उनके व्यक्तित्व से सभी प्रभावित है। इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है, "कंपाऊंड में चारों तरफ उनका एकछत्र राज है। जिन लडकों को पढाते हैं वे तो हैं ही जिन्हें नहीं पढाते वे भी जैसे उनके जरखरीद गुलाम हो।"[64] चंद्रभान सिंह के इस व्यक्तित्व से प्रभावित होकर शर्मा सर उनसे ईर्षा करते हैं। तात्पर्य यह कि चंद्रभानसिंह एक रौबिले व्यक्तित्व के मालिक हैं।

तोषी राजदान प्रिंसिपल राजदान की पत्नी है। ये बी.ए. मनोविज्ञान विषय को लेकर हुई हैं। आदमियों को पहचानने में मनोविज्ञान का सहारा लेती हैं। यह समझदार पत्नी है। पत्नी के रूप में पति के प्रति अपने कर्तव्य का स्मरण रखती है। इतना ही नहीं पति के माध्यम से कॉलेज में घटित होनेवाली सभी घटनाओं की जानकारी तथा नौकरी के संदर्भ में आनेवाले नियमों की जानकारी रखने के साथ-साथ पति के अधिकारों को भी

जानती है। उसे परिस्थिति के अनुरूप बात करने की कला अवगत है। बात करने के लिए तो पाने के लिए वह प्रथम वातावरण की निर्मिति करती है। अत: यही कहा जा संकता है कि तोषी सुलझा हुआ व्यक्तित्व है।

उपन्यास में ठक्कर की बीवी भी गौण पात्र के रूप में आई है। मिसेज ठक्कर एक उच्च वर्गीय परिवार की संभ्रात और घमंडी औरत है, जिसे अपनी रईसी का घमंड है। इस घमंडी वृत्ति के कारण वह अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझती है। जानबूझकर दूसरों को अपमानित करना तो उसकी विशेष प्रवृत्ति है। उसी प्रकार हर कार्य को व्यवहार की दृष्टि से देखने का गुण भी उसकी प्रवृत्ति का अंग है। शर्मा सर कोई-न-कोई बहाना बनाकर उनके काम करने में असमर्थता प्रकट करते हैं तो वह भी शर्मा सर को बच्चों का इंतजार करने में बिठाती है। इससे उसके व्यक्तित्व का काइयापन दृष्टिगत होता है। कुल मिलाकर मिसेज ठक्कर का व्यक्तित्व एक उच्चवर्ग की घमंडी तथा संभ्रात औरत की तरह है।

विमल और विनय, शर्मा सर के दो बच्चे हैं। वे दोनो पाठशाला जाते हैं। घर की हालत दोनों को पता है इसलिए विनय अपने दोस्त माधव से जूते माँगकर परेड करता है। वह अपने टिचरों पर क्रोधित है। क्योंकि, उसका रिजल्ट उन्होंने बिगाडा है। वह होनहार लडका है। दोनों बच्चे समझदार हैं। उनका बहुत कम चित्रण उपन्यास में आया है।

'दीक्षांत' में रतन बरूआ भी गौण पात्र के रूप में आया है। रतन बरूआ अमीर घर का लडका है। उसके पिता से कॉलेज को बहुत डोनेशन मिलता था। बरूआ उद्दंड लडका है। वह अपने अध्यापकों के साथ उद्दंडता से पेश आता है वह कॉलेज में सर्फ अपना समय बिताने के लिए ही आता है। परीक्षा के समय नकल करता है। पढाई के बजाय शोर शराबा, हुडदंगबाजी करता है। प्रो शर्मा के साथ उद्दडता से पेश आकर खुद को पास कराने की धमकी देता है। उद्दंड लडके के रूप में उसका चित्रण हुआ है।

मि गुप्ता एक खल पात्र है। वह एक धाग इंसान है। कूटनीति के आधार पर किसी को परेशान करना उसके व्यक्तित्व की विशेषता है। अपने सहकर्मचारी को सहकार्य करना यह भावना उसमें नहीं है। वह तो शर्मा सर को हर-तरह से परेशान करता है। अपने आप को बहुत विद्वान साबित करते हुए अन्य अध्यापकों पर यह जाहिर करता है कि शर्मा सर को पढाना नहीं आता। इस बात से स्पष्ट होता है कि गुप्ता सर

को दूसरों को अपमानित करने में आनंद मिलता है। इतना ही नहीं तो वे शर्मा सर पीएच् डी. है इसी कारण उनके प्रति मि. गुप्ता के मन में जलन-सी पैदा होती है। गुप्ता ईर्षालू व्यक्ति है।

'दीक्षांत' उपन्यास में अन्य जो पात्र आए वे सभी गौण रूप में आए हैं। ये सभी अध्यापक-अध्यापिकाएँ हैं। ये लड़कों को पढाने की अपेक्षा अपने व्यक्तित्व की छाप दूसरों पर छोडने तथा अपनी रईसी का बखान करते हैं। गहने, कपडे तथा किसी दुकान की चर्चा करते हैं। इनमें परस्पर संबंधों में भी टूटन, संकीर्णता, आपस में किसी विषय को लेकर अनबन होती रहती है। बंसल और यादव अपनी परेशानी पर चर्चा करते दिखाए हैं। इस तरह 'दीक्षांत' उपन्यास में गौण पात्रों का चित्रण हुआ है।

'अग्निपंखी' उपन्यास में गौण पात्रों में बडे भाई (मॉ के देवर), छोटको (जेठानी), बडको (देवरानी), त्रिलोकी ठाकुर, श्यामकिशोर आदि के नाम गिनाए जा सकते हैं। इनका चरित्र-चित्रण हासिए पर ही हुआ है। इनकी अपनी कोई अलग सत्ता न होकर वे मात्र मॉ और जयशंकर के चरित्र में सहायता करते हैं।

छोटको और बडको का मॉ के प्रति व्यवहार ईर्ष्या पूर्ण दिखाई देता है। वे हर समय ताने कसती रहती है। त्रिलोकी ठाकुर मॉ के मुँहबोले भाई हैं। उन्होंने माँ को अपनी बहन माना है और अंतिम क्षण तक इस पवित्र रिश्ते को निभाने की कोशिश करते हैं। वे तो इस परिवार को हर तरह की सहायता करने को तैयार हैं। उनके व्यक्तित्व में आदर्शवाद झलकता है।

3.3 चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ -

1. वर्णनात्मक प्रणाली -

'दीक्षांत' उपन्यास में प्रो शर्मा का चित्रण वर्णनात्मक प्रणाली से हुआ है। प्रो. शर्मा के बचपन का चित्रण वर्णनात्मक प्रणाली के प्रयोग द्वारा लेखिका ने किया है। उसी प्रकार इंटरव्यू के समय प्रो. शर्मा का चित्रण हुआ है। उनकी पोशाख, उच्चशिक्षा संबंधी वर्णन आया है। राधिका देवी बिसारिया कॉलेज के सामने की गुड की मंडी और अड्डे का, क्लास में पढाते समय शोर-शराबा, स्टाफरूम की अध्यापिकाओं का, रतन बरूआ की उद्दंडता का, अस्पताल का, शर्मा की मृत्यु के अंतिम समय का चित्रण वर्णनात्मक प्रणाली से हुआ है। वर्णनात्मक प्रणाली से प्रो शर्मा का चित्रण करने में लेखिका सफल हो चुकी है।

'अग्निपंखी' उपन्यास में माँ और जयशंकर का चित्रण वर्णनात्मक प्रणाली से हुआ है। जब माँ शहर आती है तब उसका रूप-वर्णन किया है। जयशंकर बचपन से लेकर जवांनी तक आत्मकेंद्रित रहा है। इसका भी स्पष्टता से वर्णन किया गया है। मॉ शहर आते समय रेल गाडी और शहर का वर्णन आया है। छोटी बच्ची चंदा का, गाँव का और श्यामकिशोर की शादी का वर्णन आया है। जयशंकर की कोठरी का चित्रण भी वर्णनात्मक प्रणाली से हुआ है। वर्णनात्मक प्रणाली से प्रो शर्मा का चित्रण करने में लेखिका सफल हो चुकी हैं।

2. संवादात्मक प्रणाली -

'दीक्षांत' उपन्यास में प्रो शर्मा कुंती का चित्रण संवादात्मक प्रणाली से किया है। डिसूजा, प्रिंसिपल राजदान के संवादों से प्रो. शर्मा का चित्रण हुआ है। प्रो शर्मा के संवादों से कुंती का चित्रण हुआ है। पाठशाला के अध्यापक, शर्मा के पिताजी के संवादों से शर्मा का चित्रण हुआ है। प्रो शर्मा, कुंती के संवादों से विनय का चित्रण हुआ है। डिसूजा के संवादों से मि गुप्ता का, मैनेजमेंट कमिटी का चित्रण हुआ है। प्रिंसिंपल राजदान के संवादों से मैनेजमेंट कमिटी का चित्रण है।

'अग्निपंखी' में मॉ, जयशंकर का चित्रण संवादात्मक प्रणाली से हुआ है। मॉ के संवादों से जयशंकर का चित्रण हुआ है। जयशंकर, छोटको के संवादों से माँ का चित्रण हुआ है। गाँव के लोगों के संवादों से जयशंकर का चित्रण हुआ है। मॉ के संवादों से त्रिलोकी ठाकुर का चित्रण आया है। जयशंकर के संवादों से परिवार का चित्रण आया है। संवादात्मक प्रणाली से लेखिका ने सफलता से पात्रों का चित्रण किया है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षत हम कह सकते हैं कि सूर्यबाला प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण करने में सफल हो चुकी है। लेखिका ने अनूठे चरित्रों की सृष्टि करते हुए चित्रण में सफलता पाई है। लेखिका ने उपन्यासों में मध्यवर्ग के पात्र लिए हैं। शर्मा सर के चरित्र से आज के एक ईमानदार, निष्ठावान, विनम्र और सच्चे व्यक्ति की यातना अपने करूणतम लेकिन विश्वसनीय रूप में उतारी है। शर्मा सर के चित्रण से शिक्षा व्यवस्था का चित्रण करने में लेखिका सफल हो चुकी है। लेखिका ने 'अग्निपंखी' उपन्यास में दो प्रमुख पात्रों का चित्रण सफलता से किया है। वर्तमान परिवेश, नई सभ्यता, संस्कृति-संक्रमण, टूटते परिवार, अर्थाभाव आदि के कारण एक वृद्धा

और उसमें भी विधवा नारी का जीवन किस तरह यातनामय बन जाता है उसे लेखिका ने सफलता से चित्रित किया है।

वर्तमान युग के पात्रों का ही चित्रण लेखिका ने किया है। अतएव पात्र वर्तमान से प्रभावित हैं। प्रो शर्मा का चित्रण करने के लिए कुंती, प्रिंसिपल, डिसूजा का चित्रण किया है। माँ और जयशंकर का चित्रण करने के लिए संयुक्त परिवार, ग्रामीण परिवेश का चित्रण करते हुए उनका चरित्र उभारा है। प्रो. शर्मा, माँ, जयशंकर आदि पात्र वास्तविक लगते हैं। प्रो शर्मा उच्च शिक्षा विभूषित होने पर भी समाज उसकी बरबादी का जिम्मेदार बना है। वह स्वयं भी अपनी बरबादी के लिए जिम्मेदार है। परंतु साथ में उसके पास की समाज व्यवस्था भी उतनी ही जिम्मेदार है। प्रो. शर्मा के चरित्र द्वारा अन्याय का सामना करने का आदर्श हमारे सामने रखा है। प्रो शर्मा एक आदर्श उसूलवाले अध्यापक हैं। उचशिक्षा के बावजूद भी उन्हें स्थाई नौकरी नहीं मिलती। इसी कारण उनकी दयनीयता दिखाई देती है।

माँ समाज की बुढ़ापे की पीडा व्यक्त करने में सफल है। आज के युवक नौकरी मिलने पर अपने माता-पिता को बोझ समझते हैं। जयशंकर के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है। माँ इस चरित्र द्वारा विधवा नारी की पीडा व्यक्त हुई है। मध्यवर्गीय समाज के पात्र रहने के कारण पाठक भी उनसे प्रभावित हुए हैं। माँ विधवा नारी है। अपने बेटे को बहुत चाहती हैं। ममतामयी और ग्रामीण नारी के रूप में उसका चित्रण हुआ है। जयशंकर आत्मकेंद्रित रूप में आया है। प्रो शर्मा, माँ के प्रेति लेखिका ने सहानुभूति दर्शाई है। जयशंकर के चरित्र-चित्रण में लेखिका का प्रो शर्मा और माँ जैसे चित्रण में सफलता नहीं मिली है।

सूर्यबाला ने प्रमुख पात्रों का चित्रण करने के लिए सहायक पात्रों का भी चित्रण किया है। उनमें कुंती आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित हुई है। कुंती के चित्रण द्वारा प्रो शर्मा के चित्रण में सफलता मिली है। प्रिंसिपल राजदान के चरित्र से उसकी जीवन की असफलता स्पष्ट हुई है। डिसूजा एक अच्छा अध्यापक ही नहीं, अच्छा आदमी भी है। उसका व्यवहार मानवता से भरा हुआ है। अपने सहअध्यापकों में जो दु खी है, असहाय है, ज्युनियर है उनके प्रति वह सहानुभूति रखता है। कॉलेज के छात्र, अध्यापक, प्रिसिपल, मैनेजमेंट आदि से होनेवाली संभाव्य तकलीफों के प्रति वह शर्मा को सजग करता है। कठिनाइयों से मार्ग निकालने के लिए मार्गदर्शन करता है। मित्रता करने की दृष्टि से वह एक योग्य व्यक्ति है। प्रो शर्मा स्टाफ में नए हैं, अस्थाई हैं,

उनके मार्ग में कई कठिनाइयाँ हैं इस बात को समझकर डिसूजा प्रो शर्मा को पूरा सहयोग देता रहता है। चिन्हा (बहू) का चित्रण स्वच्छंद वृत्ति की औरत के रूप में हुआ है। अपने पति और बच्चे के साथ शहर में रहना उसे पसंद है।

सूर्यबाला ने दोनों उपन्यासों में गौण पात्रों का चित्रण भी सफलता से किया है। गौण पात्र प्रमुख पात्रों की सहायता के रूप में चित्रित किए हैं। गौण पात्रों की सहायता से ही प्रमुख पात्रों का चित्रण करने में लेखिका सफल हो चुकी है। इस प्रकार सूर्यबाला पात्रों के चरित्र-चित्रण में सफल हो चुकी है।

संदर्भ सूची

1 प्रेमचंद, कुछ विचार, पृ 55

2 डॉ पांडुरंग पाटील, देवश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ 186

3 डॉ प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास, पृ 78

4 सूर्यबाल, दीक्षांत, पृ 14

5 वही, पृ 10

6 वही, पृ 13

7 वही, पृ 10

8 वही, पृ. 13

9 वही, पृ. 64

10 वही, पृ 4

11 वही, पृ. 56

12. वही, पृ 56-57

13 वही, पृ 42-48

14 वही, पृ 91

15 वही, पृ 80

16 वही, पृ 8

17 वही, पृ. 50

18 वही, पृ. 9

19 वही, पृ 43

20. वही, पृ. 44

21 वही, पृ. 46

संदर्भ सूची

1 प्रेमचंद, कुछ विचार, पृ 55

2 डॉ. पांडुरंग पाटील, देवश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ 186

3 डॉ प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास, पृ 78

4 सूर्यबाल, दीक्षांत, पृ 14

5 वही, पृ. 10

6 वही, पृ 13

7. वही, पृ 10

8. वही, पृ 13

9 वही, पृ. 64

10. वही, पृ 4

11 वही, पृ. 56

12 वही, पृ 56-57

13 वही, पृ 42-48

14 वही, पृ 91

15. वही, पृ. 80

16 वही, पृ. 8

17 वही, पृ 50

18 वही, पृ. 9

19 वही, पृ. 43

20 वही, पृ 44

21. वही, पृ 46

SHIVAJI UNIVERSITY
KOLHAPUR

22 सूर्यबाला, दीक्षांत, पृ 46

23 वही, पृ. 55

24. वही, पृ 34

25 वही, पृ 34

26 वही, अग्निपंखी, पृ 10

27 वही, पृ. 39

28 वही, पृ 40

29. वही, पृ 32

30 वही, पृ 35

31 वही, पृ 12

32 वही, पृ 33

33 वही, पृ 25

34 वही, पृ 46

35 वही, पृ 41

36 वही, पृ 20

37 वही, पृ. 22

38 वही, पृ 21

39 वही, पृ. 30

40 वही, पृ. 59

41. वही, पृ. 16

42 वही, पृ. 36-37

43 वही, पृ. 54

44 वही, पृ 55

45 सूर्यबाला, अग्निपंखी, पृ 15

46 वही, पृ. 60

47 वही, पृ 62

48 वही, पृ 32

49 वही, दीक्षांत, पृ 31

50 वही, पृ 48

51 वही, पृ. 49

52 वही, पृ 71

53 वही, पृ 36

54 वही, पृ. 34

55 वही, पृ 37

56 वही, पृ 89-90

57 वही, पृ 104

58 वही, पृ. 90

59 वही, पृ 93

60 वही, पृ. 42

61 वही, पृ 45-46

62 वही, अग्निपंखी, पृ. 58

63 वही, पृ 27

64 वही, दीक्षांत, पृ 75